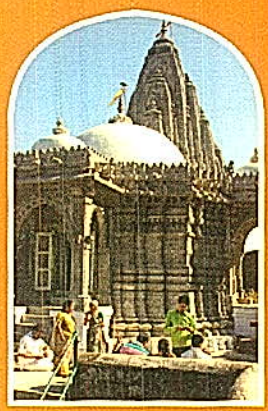

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2542

VOLUME : 7 ISSUE : 4 MUMBAI, OCTOBER 2016 PAGES : 40 PRICE : ₹25

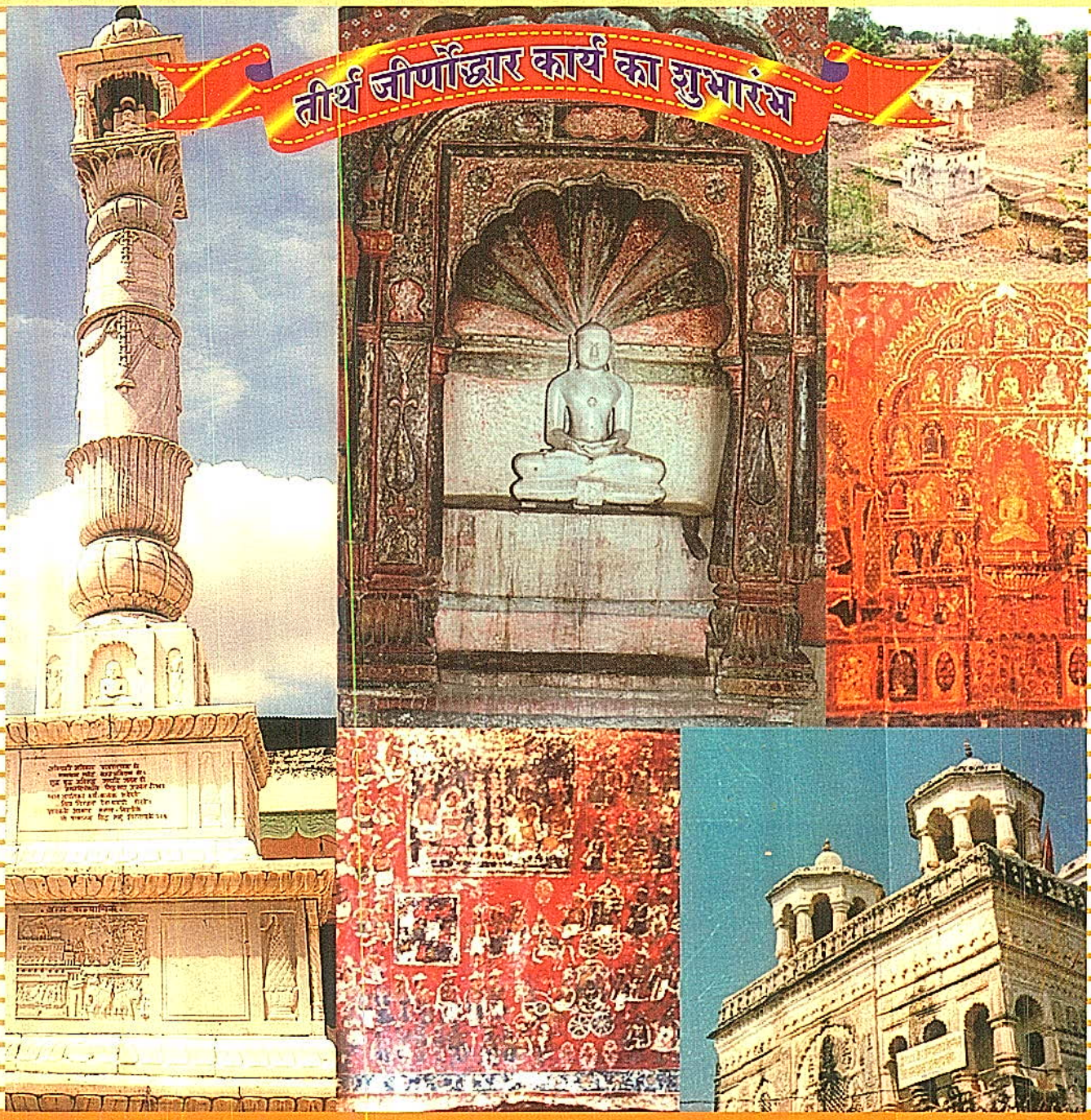

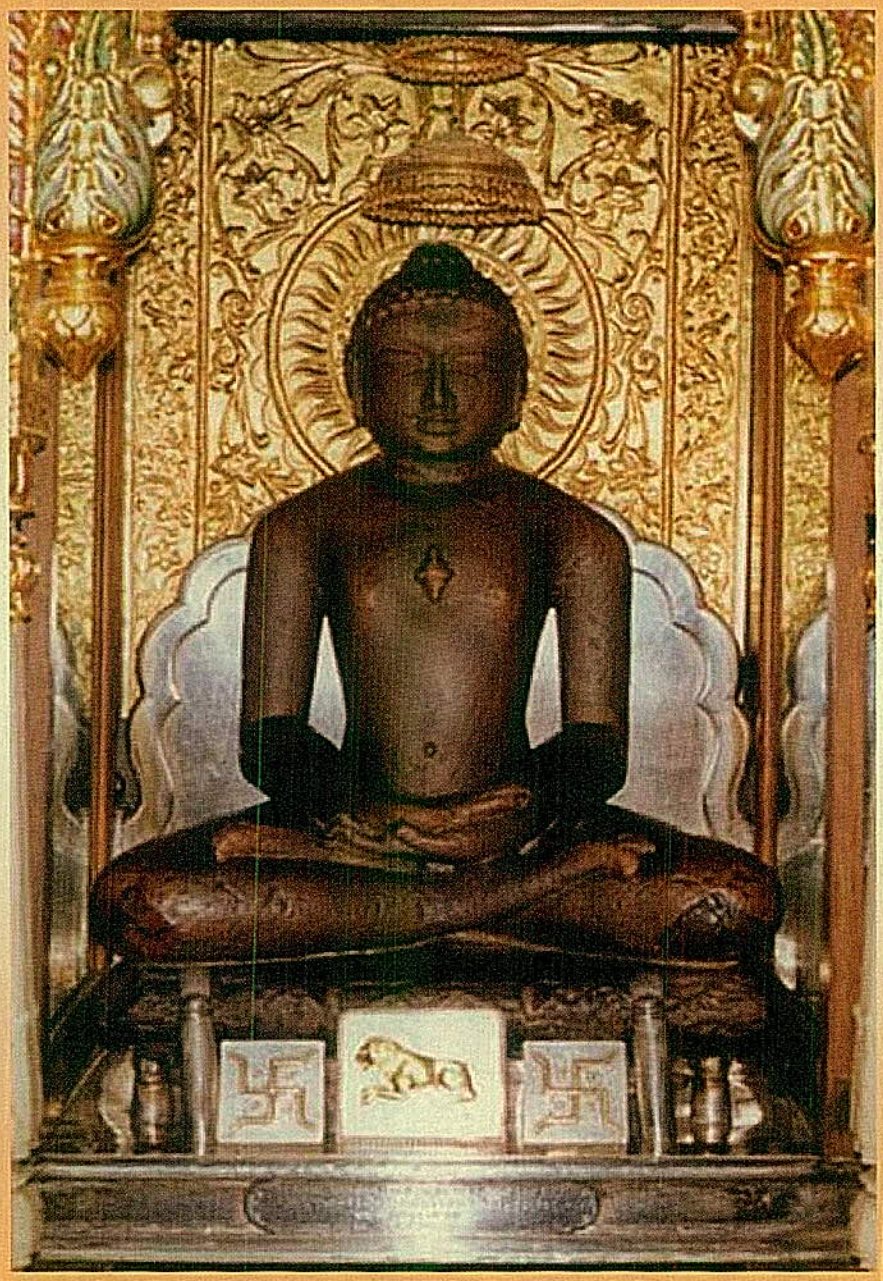

पतित पावन तरण तारण, हमारी फरियाद सुन लेना।
तेरे चरणों में मस्तक है, हमें अपना बना लेना।।

R.K. MARBLE GROUP

Corporate Office : Makrana Road, Madanganj-Kishangarh, Dist.Ajmer(Raj.)-305801
Tel : +91 1463 260101-10, Fax : +91 1463 250601
E-mail : info@rkmarble.com, Website : www.rkmarble.com

दीपावली पर एक दीप तीर्थ संरक्षण हेतु मेरी ओर से

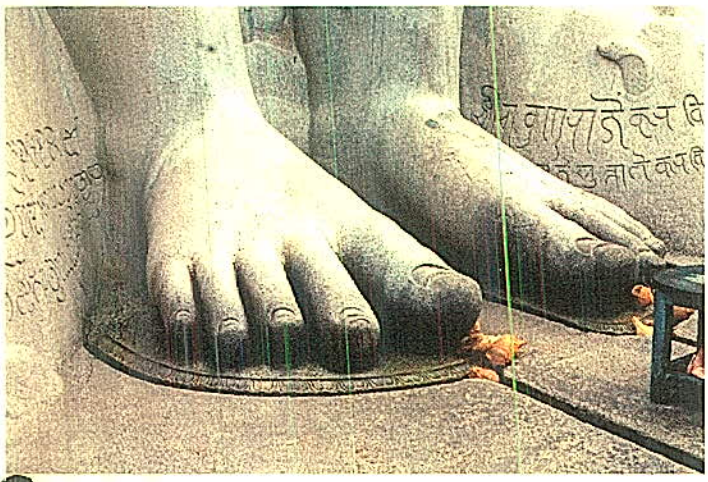

भारतीय संस्कृति उत्सव प्रधान संस्कृति है। यहाँ सभी कार्यों में आनंद लिया जाता है जो 'मोद' प्रसन्नता का कारण बनता है। हमारी श्रमण संस्कृति तो इतनी उन्नत है कि यहाँ जन्म से ज्यादा 'मृत्यु' का आनंद लिया जाता है, जिसे हम मृत्यु महोत्सव के रूप में मनाते हैं, जिनका मृत्यु महोत्सव मन जाता है उनका जीवन धन्य माना जाता है। दीपावली पर्व भी निर्वाण का उत्सव है, वर्तमान शासन नायक भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण कल्याणक हम दीपावली पर्व के रूप में मनाते हैं, यह पर्व हमें बहुत बड़ा सन्देश देता है, यह सन्देश हमारे चातुर्मास से ही प्रारम्भ हो जाता है, इस चातुर्मास में शाश्वत पर्व पर्यूषण आता है जो हमें धर्म का मर्म समझाता है। हमारे आचार्य-उपाध्याय-साधु चतुर्विध संघ हमें अपने आचरण के माध्यम से शिक्षा देते हैं कि हम आचरण किस प्रकार रखें। फिर क्षमावाणी फिर हमारे अहंकार के विनाश का सन्देश 'विजया दशमी' देती है। फिर जीवन में निर्वाण की बात हो जाती है।

यह अंक जब तक आपके पास पहुँचेगा तब तक आप सभी दीपावली की तैयारियों में लगे होगें, कुछ चातुर्मास निष्ठापन की तैयारियों में। आयोजक-प्रायोजक और श्रावक-श्राविका सबसे व्यस्त रहेंगे। इन व्यस्तताओं के बीच में तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार की ओर से, मैं अपनी ओर से आपसे कुछ बातें कहना चाहूँगी।

सितम्बर २०१६ के अंक में हमने तीर्थक्षेत्र कमेटी की गत छह माह की रिपोर्ट प्रकाशित की है। २५ फरवरी २०१६ से हमारी पूरी टीम ने भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का कार्यभार सम्हाला, और कुछ अच्छा करने का प्रयास किया है। पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण सभी जगह स्थापित हमारी संस्कृति की पहचान हमारे तीर्थों पर हमारे पदाधिकारियों, सदस्यों व मैंने स्वयं जाने का प्रयास किया है। तीर्थों के संरक्षण एवं विकास की मनोभावना कमेटी सहित सम्पूर्ण देश में जगी है। लेकिन फिर भी बहुत कार्य बाकी है, जो हम सभी के सहयोग से पूर्ण होगा।

इस माह में जैन संस्कृति के दैदीप्यमान नक्षत्र परमपूज्य आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज व पूज्य आर्यिकारत्न ज्ञानमती माताजी का जन्म दिवस भी शरद पूर्णिमा १६ अक्टूबर को है। आचार्यश्री वर्धमानसागरजी का जन्म दिवस भी विगत माह में मनाया गया है। अहिंसा के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व में क्रांति लाने वाले महात्मा गांधी का जन्म दिवस भी २ अक्टूबर को हमने मनाया है। अक्टूबर माह तो हमारे उल्लास का माह बनने जा रहा है। हम सभी मिलकर इस माह में अपने आपको संकल्पित कर लें।

आचार्यश्री विद्यानंदजी हमेशा कहते है - 'ज्ञानामृतं भोजनम्'। शरीर के लिए भोजन आवश्यक है तो आत्मा की तृप्ति के लिए भी भोजन आवश्यक है, वह भोजन हमने अभी चार माह में बही ज्ञानगंगा के माध्यम से प्राप्त किया है। इसे अपने अन्तर में उतारने की आवश्यकता है।

मैंने कुछ बातें जो मुनिराजों के मुंह से सुनी है कि 'पुण्य और बुद्धि' ट्रेवलर्स चेक की तरह हैं, जो हमेशा हमारे साथ रहते हैं, जिन्हें कोई छीन नहीं सकता, जो कभी भी, कहीं भी भुनाये जा सकते हैं।

चातुर्मास और विभिन्न पर्वों ने निश्चित रूप से हमारी बुद्धि में वृद्धि की है। हमने चारों प्रकार के दान का पुण्य भी अर्जित किया है। ये दोनों बढ़ते रहें, मैं तो दीपावली पर्व पर यही कामना करती हूँ कि बुद्धि और पुण्य यदि हमारे साथ है तो 'लक्ष्मी' तो आती ही रहेगी। यह लक्ष्मी चंचला है जो इधर-उधर जाती रहती है। इसलिए इसका आयोजन भी हम बुद्धिपूर्वक कर लें तो यह जीवन धन्य हो सकता है।

भगवान महावीर के निर्वाण दिवस व दीपावली के पर्व पर मेरी आपसे कामना है कि इस वर्ष जब आप दीपावली मनाएं तो अपनी दीदी का ध्यान भी रखें, मेरी शुभकामनाएं तो आपके साथ है, आपकी मेरे साथ है, लेकिन हमें अपनी जिम्मेदारियों का ध्यान भी रखना है। इसलिए कुछ दीपक मैं चाहती हूँ कि आप मेरी ओर से भी प्रज्ज्वलित करें व दीपमालिका के इस पर्व पर पुण्यार्जन करें।

एक दीपक - तीर्थों के विकास के लिए
एक दीपक - तीर्थों के संरक्षण के लिए
एक दीपक - तीर्थों के संवर्धन के लिए
एक दीपक - आपसी सद्भावना के लिए
एक दीपक - सबकी खुशी के लिए
एक दीपक - संस्कृति के सरंक्षण के लिए
एक दीपक - तीर्थक्षेत्र कमेटी के लिए
एक दीपक - हमारे चतुर्विध संघ की रत्नत्रय कुशलता हेतु
एक दीपक - तीर्थ यात्रा के लिए
एक दीपक - प्राचीन तीर्थों को बचाने के लिए
एक दीपक - सभी में समन्वय के लिए
एक दीपक - भगवान बाहुबली महामस्तकाभिषेक की सफलता के लिए

आइये, दीपकों की इस श्रृंखला को बढ़ाये और दीप से दीप जलाएं, आपसी प्रेम-स्नेह के दीपक में समन्वय सद्भावना-आस्था-श्रद्धा-विश्वास की ज्योति जलाकर अपने अज्ञान अंधकार को समाप्त करें।

वीर निर्वाण संवत् २५४३ की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ -

Sarita Jain

- सरिता एम.के. जैन
चैन्नई

दीपावली की आहट सुनाई देने लगी है

भगवान महावीर के निर्वाण की स्मृति में मनाया जाने वाला भारत का सर्वाधिक लोकप्रिय पर्व दीपावली अब हमारी दहलीज पर आ गया है। उसके आगमन की आहट सुनाई देने लगी है क्योंकि इसी पुनीत दिवस पर पूज्य मुनिराजों, आर्यिका माताओं द्वारा वर्षायोग का निष्ठापन कर विहार की स्वतंत्रता प्राप्त की जाती है। भले ही वह तुरन्त बाद हो या अष्टान्हिका पर्व या कुछ अधिक समय बाद, यह साधु-संघों की भावी योजनाओं एवं अनुकूलताओं पर निर्भर करता है।

श्रावकों ने भी पर्युषण पर्व की सानन्द समाप्ति पर रुचि एवं अनुकूलता के अनुसार छोटी-बड़ी तीर्थयात्रायें की हैं एवं अब मानसून के विदा हो जाने के कारण घरों एवं मन्दिरों की साफ-सफाई, रंग-रोगन की योजना बनाई जाने लगी है। इस सफाई की प्रक्रिया में हमें दुर्लभ धरोहर प्राप्त हो जाती हैं। 2 वर्ष पूर्व इन्दौर के गंगवाल परिवार में सफाई के मध्य कुछ बक्से विशाल घर के एक कक्ष में रखे मिले। जब उनको खोला गया तो उनमें प्राचीन पांडुलिपियों का बहुमूल्य खजाना प्राप्त हुआ। विधिपूर्वक उनकी साफ-सफाई एवं संरक्षण करने पर हमें 188 पांडुलिपियाँ मिली जो समाज की अमूल्य निधि है। इसी वर्ष 2016 में श्री दिगम्बर जैन शीतल तीर्थ क्षेत्र रतलाम में सफाई के मध्य हमें कुछ पोटलियाँ प्राप्त हुई जिनमें से 600 से अधिक पांडुलिपियाँ प्राप्त हो चुकी है। संरक्षण के बाद 100 से अधिक और मिलने की संभावना है।

कहने का आशय यह है कि इस वर्ष सफाई के मध्य यह ध्यान देने का विषय है कि यदि आपके घर, प्रतिष्ठान मन्दिर या अतिथिगृह के किसी कक्ष, अलमारी आदि में ऐसी पांडुलिपियाँ दस्तावेज, नक्शे आदि रखें हैं जिनकी पूरी जानकारी आपके पास भी नहीं है तो उनको प्रकाश में लावें। संभव है कि उनमें कोई दुर्लभ कृति छिपी हो। इस विषय में सहयोग के लिए आप मुझसे भी सम्पर्क कर सकते हैं।

कुछ माह पूर्व आपकी तीर्थक्षेत्र कमेटी ने 2 वर्गों में निबन्ध प्रतियोगिता की घोषणा की थी। युवावर्ग एवं महिलावर्ग हेतु अलग-अलग आयोजित इस निबन्ध प्रतियोगिता में अन्तिम तिथि तक 68 प्रविष्टियाँ प्राप्त होना इस बात का प्रमाण है कि हमारे समाज की बहनें एवं युवा साथी तीर्थों के प्रति सजग हैं। हम शीघ्र ही इनके परिणाम घोषित करेंगे एवं पुरस्कृत श्रेष्ठ आलेखों को क्रमशः जैन तीर्थ वन्दना में प्रकाशित करेंगे। इस प्रयास से हमारे पाठकों को अनेक नवीन विचार एवं चिन्तन की जानकारी मिलेगी जो अन्ततोगत्वा हमारे तीर्थों के विकास का पथ प्रशस्त करेंगे।

जैन तीर्थ वन्दना के सितम्बर-16 अंक में मैंने 4 तीर्थ निर्देशिकाओं। डाइरेक्टरीज की चर्चा की थी। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि हमारे सुधी पाठकों एवं इनके प्रकाशकों ने तत्परता से प्रसन्नता पूर्वक इनका संज्ञान लिया। मैं यहाँ कतिपय बिन्दु रेखांकित कर रहा हूँ।

1- **दिगम्बर जैन तीर्थ निर्देशिका** के प्रकाशक श्री हँसमुख जैन गांधी ने सूचित किया है कि निर्देशिका की अब तक 75000 प्रतियाँ प्रकाशित/वितरित किये जाने के बाद नया संस्करण जनवरी-17 में प्रकाश्य है। इसमें सभी पूर्ण प्रकाशित तीर्थो के बारे में नवीन अतिरिक्त सूचनाओं, पूर्व की सूचनाओं में आवश्यक संशोधन, नवीन तीर्थों की जानकारीयों को समाहित किया जा रहा है। नया संस्करण और अधिक उपयोगी होगा।

2-डॉ. आ.के. जैन, कोटा ने सूचित किया है कि **जैन तीर्थ दर्शन एवं पर्यटन स्थल** शीर्षक डाइरेक्टरी के अप्राप्त होने पर उन्होंने पाकेट बुक साइज में **जैन तीर्थ वन्दना एवं दर्शनीय स्थल** शीर्षक पुस्तक प्रकाशित की है। इसमें प्रत्येक राज्य के अलग-अलग मानचित्र एव भारत के रेल-रोड मानचित्र भी है। पुस्तक का प्राप्ति स्रोत निम्नवत् हैं।

आर.के.प्रकाशन

70, स्टेशन रोड

कोटा जंक्शन-324002, मूल्य -रु.100/-

0744-2440544, 094141-89544

हमारे पाठकों द्वारा उपलब्ध कराई गई कतिपय अन्य डाइरेक्टरीज निम्नवत् हैं-

1-**जैन तीर्थ दर्शन गाईड मानचित्र, पता, फोन न. सहित**

ब्र. विनोदसागर शास्त्री

ज्ञानकुटी साहित्य केन्द्र, सिद्धनगर पुरवा, नागपुर रोड, जबलपुर-482003, 0761-2671655, 09425 129377 डिमार्ड साइज, पृ.180, मूल्य 60/-

2- **जैन डायरी**- अखिल भारतवर्षीय जैन तीर्थ दर्शन श्री

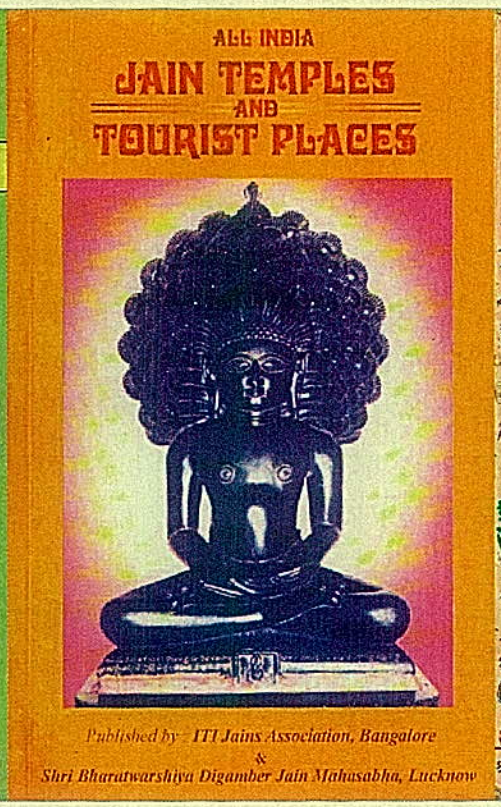

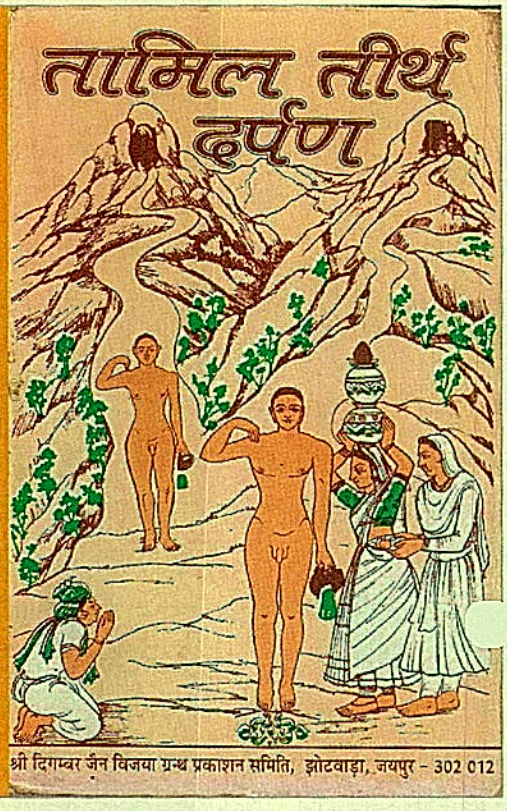

विमलचन्द जैन एवं श्री शांतिलाल जैन

जैन डायरीज, डायरी हाउस, जैन मन्दिर के पास

277, मेहन्दी का चौक, रामगंज बाजार, जयपुर-302 003

डिमाई साइज, पृ 224, मूल्य रु.10.00 (1998)

3. **All India Jain Temples & Tourist Places**

Shri B.C.Nagraj
ITI Jain Association Bangalore,780, 7th Cross,
10th Main, B.S.K.I Stage, 2nd block, Bangalore-560050
Pages 4+94, Price Rs. 40/-, 2001

4. **तामिल तीर्थ दर्पण, ग्रन्थ-2**

105 आर्यिका क्षी विजयामती माताजी

श्री दिगम्बर जैन विजयाग्रंथ प्रकाशन समिति

114, जैन भगवती भवन, शिल्प कालोनी कालवाड रोड

झोटवाडा, जयपुर-302012

द्वितीय संस्करण, 1998 पृ. 104, मूल्य 25/-

इसी प्रकार की अन्य डाइरेक्टरीज के बारे में सुझाव/सूचना आमंत्रित है। यदि नये संस्करण छपे हैं तो कृपया प्रकाशक उनकी जानकारी भी भेजें।

तीर्थयात्राओं को प्रोत्साहित करने में आपके सुझावों का सदैव स्वागत हैं।

दीपावली एवं नववर्ष की अग्रिम शुभकामनाओं सहित।

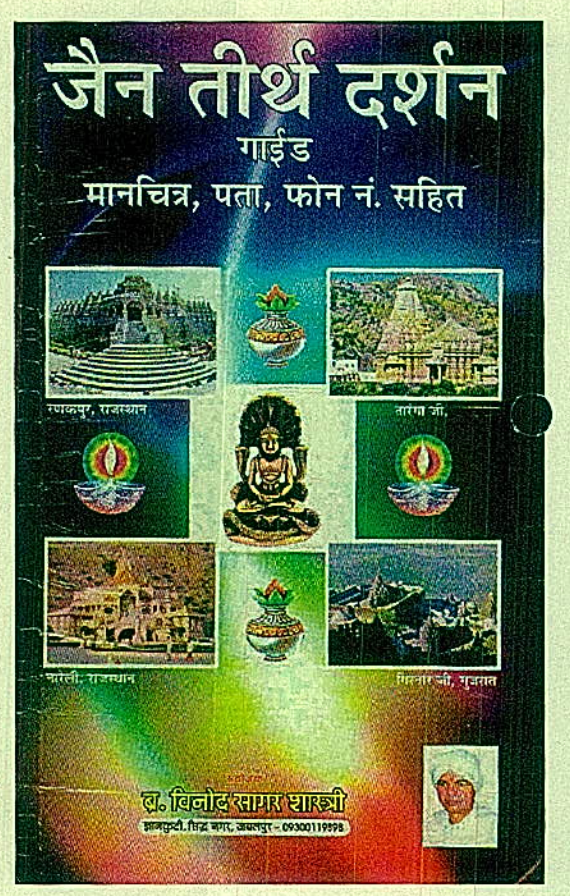

- डॉ.अनुपम जैन, इंदौर

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 7 अंक 4 अक्टोवर 2016

श्रीमती सरिता एम.जैन	अध्यक्ष
श्री प्रदीप जैन पी.एन.सी.	उपाध्यक्ष
श्री वसंतलाल एम.दोशी	उपाध्यक्ष
श्री नीलम अजमेरा	उपाध्यक्ष
श्री पंकज जैन	उपाध्यक्ष
श्री संतोष पेंढारी	महामंत्री
श्री शिखरचंद पहाड़िया	कोषाध्यक्ष
श्री विनोद वाकलीवाल	मंत्री
श्री वीरेश सेठ	मंत्री
श्री शरद जैन	मंत्री
श्री खुशाल जैन सी.ए.	मंत्री

प्रो.अनुपम जैन, इंदौर - प्रधान संपादक
उमानाथ दुबे - संपादक

परामर्श मंडल

डॉ. भागचन्द जैन 'भास्कर', नागपुर
शांतिलाल जैन जांगड़ा, उदयपुर
प्रो. डॉ.अजित दास, चेन्नई
प्रो. डी.ए.पाटील, जयसिंगपुर
श्री अनिलकुमार जोहरापुरकर, नागपुर
श्री स्वराज जैन, दिल्ली
श्री राजेन्द्र महावीर, सनावद

कार्यालय

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370
e-mail : tirthvandana4@yahoo.com
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : www.digamberjainteerth.com

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी. पी. रोड, मुंबई के सेविंग खाता क्र. 13100100008770, IFSC CODE BARB0VPROAD अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी. पी. टैंक, मुंबई के खाता क्रमांक 001210100017881, IFSC CODE BKID0000012 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें।

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

इस अंक में

तीर्थ जीर्णोद्धार कार्य का शुभारंभ	8
महामस्तकाभिषेक महोत्सव के सुअवसर पर दिगम्बर जैन मंदिरों का जीर्णोध्दार	12
सामाजिक परिवर्तन और स्वतंत्रता आंदोलन में गजपंथ सिद्धक्षेत्र का योगदान	13
तारंगा सिद्धक्षेत्र	16
मूकमाटी में आध्यात्मिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक चेतना	18
मध्यांचल कमेटी की अनूठी पहल	22
युद्ध शांति की अनिवार्य शर्त	24
Ahimsa walk – Tamilnadu	25
आचार्य विमलसागरजी की अभिवन्दना में हुए अनेक आयोजन	29
श्री नंदीश्वर पंचालेश्वर अतिशय क्षेत्र	31
श्री 1008 चिंतामणी पार्श्वनाथ दिगंबर जैन (प्राचिन) अतिशय क्षेत्र कोठाळा	33
हमारे नये बने सदस्य	36

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवधर्न और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिए

संरक्षक सदस्य	रु.5,00,000/- प्रदान कर
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/- प्रदान कर
सम्मानीय सदस्य	रु. 31,000/- प्रदान कर
आजीवन सदस्य	रु. 11,000/- प्रदान कर

नोट:

1) कोई भी फर्म, पेढी, कम्पनी, चरिटेबल ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब सोसायटी या कार्पोरेट बाडी भी उपरोक्त प्रावधान के अन्तर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्ष के लिए होगी।

2) जो सदस्य इनकम टैक्स की छूट चाहेगें उन्हें 80जी के अन्तर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।

3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके व्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

तीर्थ जीर्णोद्धार कार्य का शुभारंभ

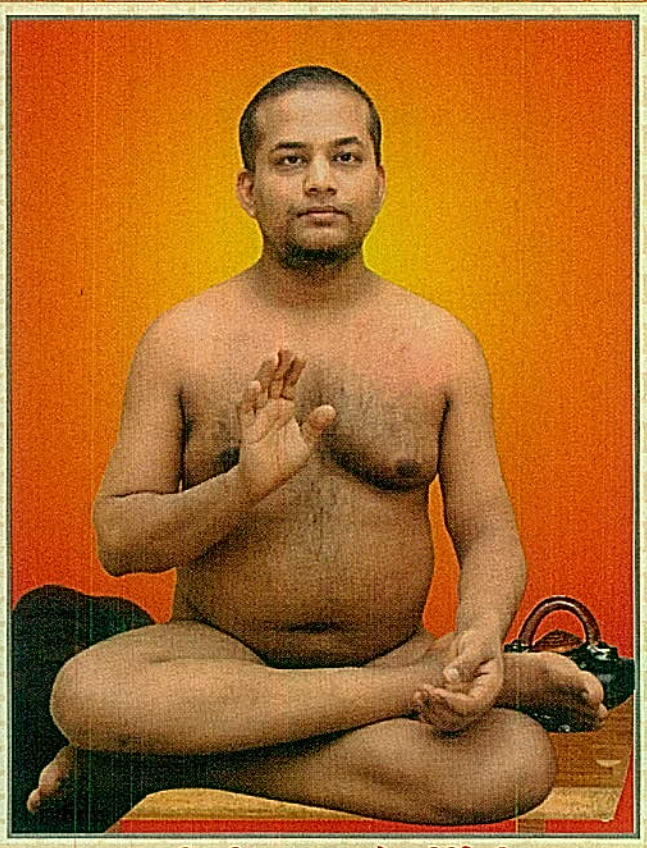

परम पूज्य मुनि श्री १०८ अमोघकीर्ति जी महाराज

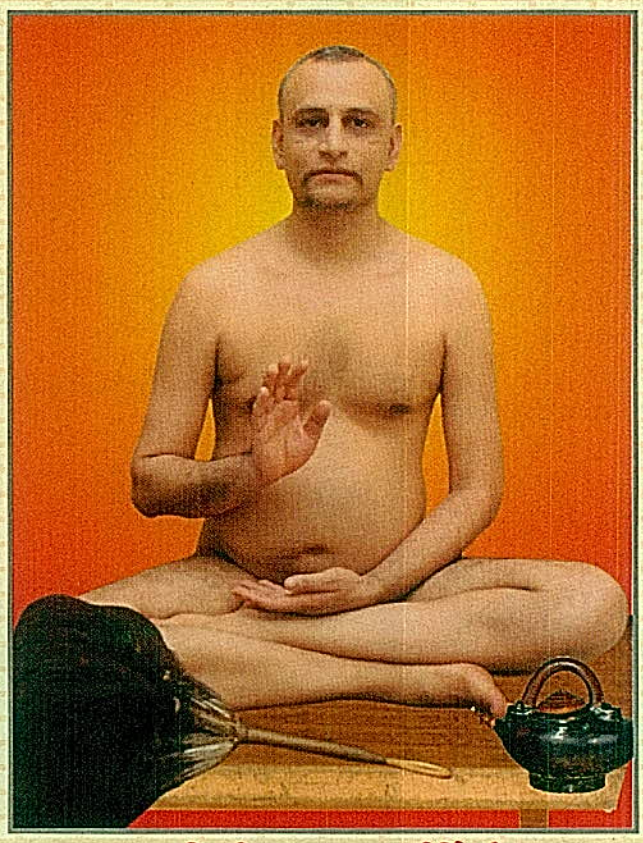

परम पूज्य मुनि श्री १०८ अमरकीर्ति जी महाराज

हमारे आध्यात्मिक श्रध्दा के श्रेष्ठतम तीर्थ, मंदिर जहाँ का कण-कण हमारे लिए पवित्र है, ऐसे सभी तीर्थ हमारी आस्था और संस्कृति की धरोहर है। यह तीर्थ क्षतिग्रस्त होने पर उसका जीर्णोद्धार, संवर्धन करना हमारा प्रथम कर्तव्य है । इसी मूलभूत तत्व को मध्य नजर रखते हूए परम पूज्य युगल मुनि १०८ श्री अमोघकिर्तीजी एवं १०८ श्री अमरकिर्तीजी महाराज की पावन प्रेरणा और आशीर्वाद से मुंबई मे दिनांक १० जुलाई २०१६ को जीर्णोद्धार कलश स्थापना अनुष्ठान समारोह संपन्न हुआ था इसमें मुंबई के २१० परिवारों ने सम्मिलित होकर अपनी चंचला लक्ष्मी का सदुपयोग करके हम

श्रीमती रूबीजी किर्तीकुमार दावडा, श्री संतोश जैन, श्री अनिलकुमार जोहरापुरकर, श्री केतन ठोल्या
मंदिरों का अवलोकन करने के पश्चात, मूलनायक भगवान श्री १००८ पार्श्वनाथ स्वामी के जिनालय में

दि. ०५/१०/२०१६

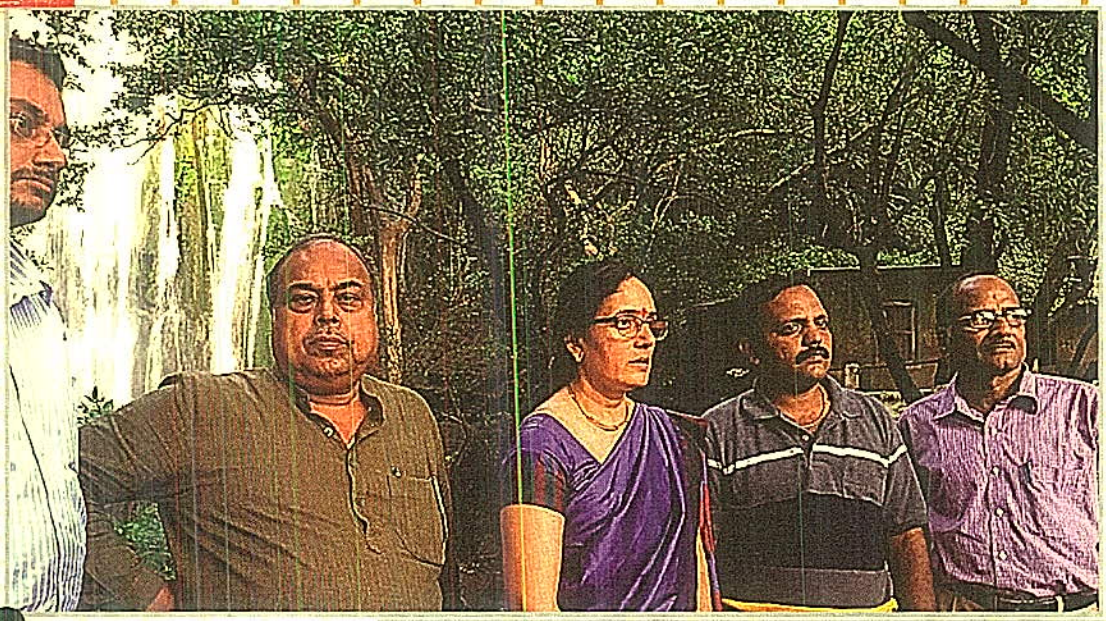

मुक्तागिरि क्षेत्र पहाड़ पर अवलोकन करते हुये श्री अनिक डोटिया मुंबई, श्री संतोष जैन, श्रीमती रूबी किर्तीकुमार दावडा, श्री अनिलकुमार जोहरापुरकर, श्री केतन ठोल्या ..... दि. ०५/१०/२०१६

मुक्तागिरि क्षेत्र पहाड़ पर अवलोकन करते हुये श्री अनिक डोटिया मुंबई, श्री संतोष जैन, श्रीमती रूबी किर्तीकुमार दावडा, श्री अतुल कळमकर मैनेजिंग ट्रस्टी मुक्तागिरि क्षेत्र ..... दि. ०५/१०/२०१६

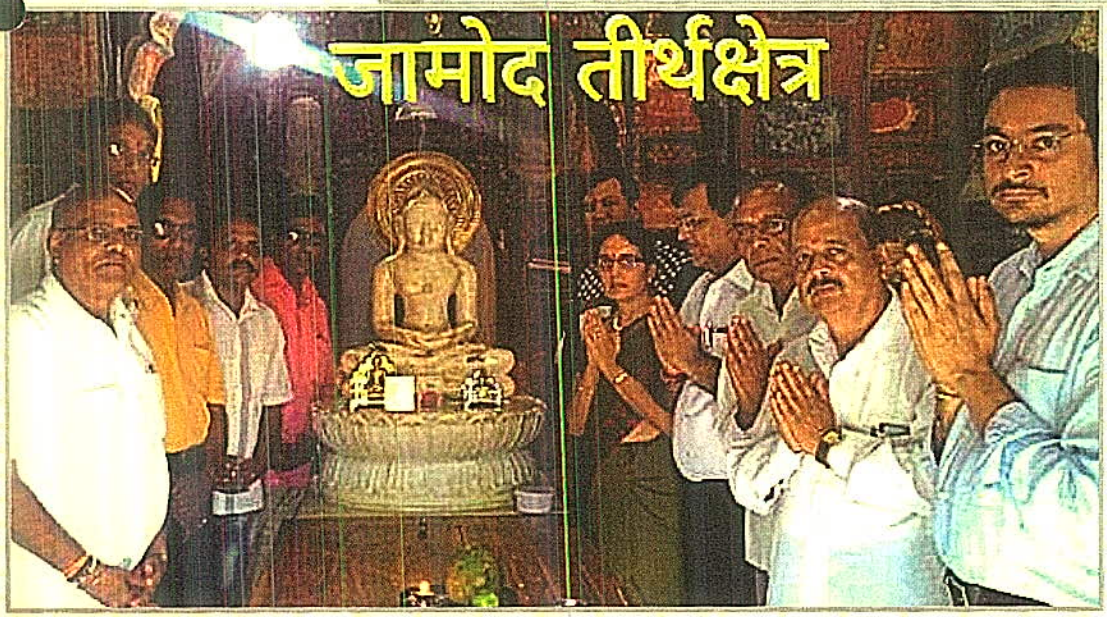

श्री देवेन्द्र काला महामंत्री महाराष्ट्र अंचल, श्री मनोज साहूजी कोषाध्यक्ष महाराष्ट्र अंचल, केतन ठोल्या, श्री सुरेश विनायके, अध्यक्ष-जामोद, श्री अनिल जमगे, श्री अमित कासलीवाल, श्रीमती रूबी दावडा, श्री नीलम अजमेरा, श्री सुभाष विनायके, श्री रविंद्र कटके, श्री अनिक डोटीया

दि. ०६/१०/१६

श्री देवेन्द्र काला महामंत्री महाराष्ट्र अंचल, श्री मनोज साहूजी कोषाध्यक्ष महाराष्ट्र अंचल, केतन ठोल्या, श्री सुरेश विनायके, अध्यक्ष-जामोद, श्री अनिल जमगे, श्री अमित कासलीवाल, श्रीमती रूबी दावडा, श्री नीलम अजमेरा, श्री सुभाष विनायके, श्री रविंद्र कटके, श्री अनिक डोटीया
दि. ०६/१०/१६

श्रीमती रूबीजी दावडा, श्री निलमजी अजमेरा, श्री केतन ठोल्या, श्री रविंद्र कटके, श्री तेजपाल झांझरीजी एवं अन्य

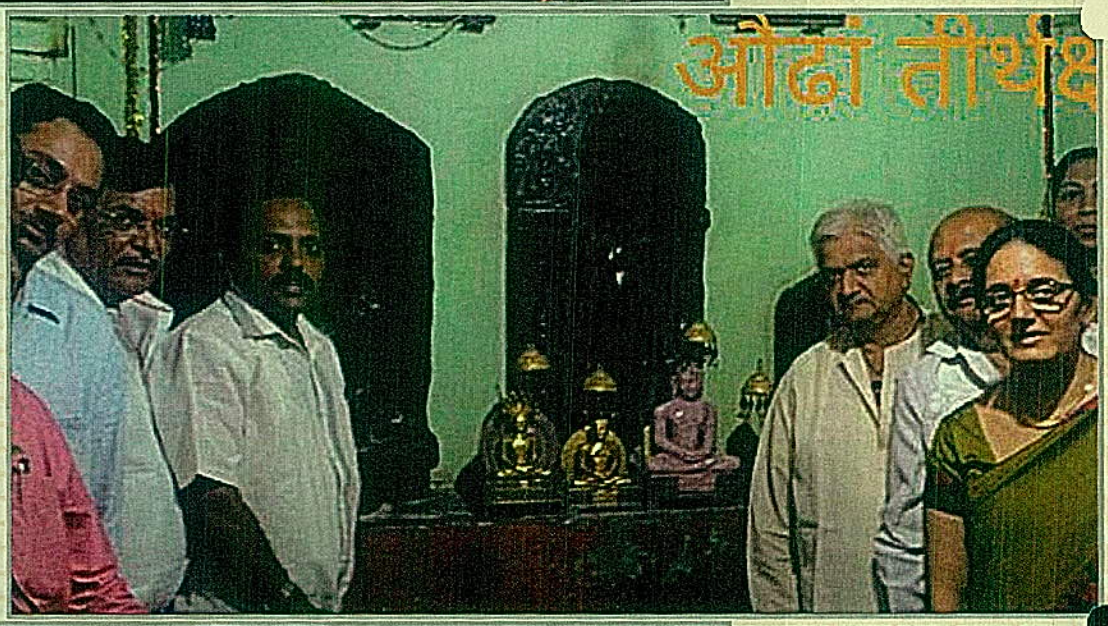

अनुष्ठान समारोह को ऐतिहासिक बनाया था। श्री वीरशासन प्रभावना ट्रस्ट, मुंबई एवं श्रीमती सरिता एम.के.जैन राष्ट्रीय अध्यक्षा, भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सक्रिय मार्गदर्शन से जीर्णोद्धार योजना के अंतर्गत देश के १५ प्राचीन जिनालयों का चुनाव करके, दिनांक ५ अक्टूबर २०१६ को, भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोशजी जैन (पेंढारी) श्री वीरशासन प्रभावना ट्रस्ट की अध्यक्षा श्रीमती रूबी किर्ती दावडा, ट्रस्टी श्री अनिक डोटिया, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री नीलमजी अजमेरा, श्री अनिलजी जमगे, जैन तीर्थवंदना के परामर्ष मंडल के सदस्य श्री अनिलकुमार जोहरापुरकर, इन सभी सदस्यों नें प्रथम श्री सिध्दक्षेत्र मुक्तागिरि का भारी वर्षा के बीच अवलोकन किया, पहाड़ पर स्थित अलग अलग शासन काल में निर्मित वास्तुकला का अद्वितीय संगम मंदिर क्र. ५ से ९ तक मंदिर समुह का जीर्णोद्धार और संवर्धन करने की योजना बनाई गयी, यह मंदिर समुह अधिक क्षतिग्रस्त होने के कारण इसका संवर्धन प्रथम करने की सहमति बनी, इस क्षेत्र के मॅनेजिंग ट्रस्टी श्री अतुल कळमकर इन्होंने क्षेत्र के इंजिनियर के समक्ष इसका प्रारूप रखा अंतिम विचारों के बाद यह कार्य जल्द शुरू करने की सहमति बनकर आगामी २ माह में यह कार्य पूर्ण करने का आश्वासन श्रीमान अतुल कळमकर ने दिया। दिनांक ६ अक्टूबर को महाराष्ट्र के जळगांव जामोद प्राचीन क्षेत्र को भेंट देकर उस क्षेत्र का अवलोकन किया गया, तथा प्राचीन चित्रकारी को संरक्षित करने का निर्णय लिया गया। तत्पश्चात औढा-नागनाथ (परभणी) इस क्षेत्र को भेंट देकर इसका भी निरीक्षण किया गया एवं मूर्तियों का लेपन कार्य करने का निश्चित किया गया।

प्रथम चरण में जल्द ही यह कार्य शुरू होकर यह क्षेत्र संरक्षित कर दिये जायेंगे तथा अगली समीक्षा आप के समक्ष रखेंगे।

संतोश जैन (पेंढारी)
महामंत्री

श्री सिद्धक्षेत्र गिरनारजी से सम्बंधित समस्या के समाधान के लिये सांसद श्री महेशजी गीरी के साथ विशेष सभा दि. २०/०९/२०१६ को दिल्ली में आयोजित की गई। सभा मे उपस्थित राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम.के.जैन, सांसद श्री महेश गीरी, श्री संतोष जैन, श्री एस.के.जैन दिल्ली (Retd. IPS), श्री सतीश जैन दिल्ली, श्री विनोद बाकलीवाल मैसुर, श्री दीपकजी जैन दिल्ली, श्री अनिलजी जैन एवं श्री प्रदीप जैन PNC आगरा

श्री क्षेत्र श्रवणबेलगोला में 2018 फरवरी को
संपन्न होनेवाला गोम्मटेश्वर भगवान श्री श्री श्री बाहुबली स्वामी

महामस्तकाभिषेक महोत्सव के सुअवसर पर दिगम्बर जैन मंदिरों का जीर्णोध्दार

श्री क्षेत्र श्रवणबेलगोला के श्री बाहुबली स्वामी का महामस्तकाभिषेक महोत्सव 2018 मे संपन्न हो रहा है। श्रवणबेलगोला जिन मंदिरो का गांव है। इस सुअवसर पर श्रवणबेलगोला एवं आस पास के 50 (पचास) मंदिरों का जीर्णोध्दार कार्य करणे की योजना बनाई है। जीर्णोद्धार कार्य इस प्रकार है - दिवारों में पडे दरार की मरम्मत, बरसात के पानी को सुरक्षित करना, सि.सि.टि.वि. एवं सोलर लाईट लगाना, पीने की पानी की व्यवस्था, बिजली की व्यवस्था, मंदिर परिसर में एवं इस रास्ते पर इंटर्लाक डालना, सुरक्षा के लिए कांपौंड दिवारों की उन्चाई बढाना, दरवाजा एवं खिडकी बदलाना, गर्भगृह का जीर्णोध्दार एवं ग्रानैट या मार्बल लगाना. सभी मंदिरों में कार्यालय स्थापीत करना एवं सूचना फलक लगवाना आदि कार्य सम्मिलित है। इस कार्य को लगबग दो करोड रूपये व्यय का अनुमान है। इस योजना को यशस्वि करने के लिए आपके दान राशी, सहकार्य की अपेक्षा करते है। कृपया आपकी राशी **"SDJMIMC Trust ® : GBMMC – 18, Shravanabelagola"** इस नाम पर बैक डि.डि. लेकर नीचे दिये गये पत्ते पर भेजने की कृपा करें। दान राशी के लिए 80G का प्रमाणपत्र दिया जायेगा।

Address: **The Office Secretary,**
Javeri Dharmashala, Near KSRTC Bus Station,
Shravanabelagola – 573135, Channaravapatna Taluka,
Hassan District, Karnataka.
Email : secretarymmc18@gmail.com

रू. 11,111.00 (ग्यारह हजार एक सौ ग्यारह रूपया) के दान देनेवालों का नाम विशेषांक में प्रकाशित किया जायेगा। रू. 35,101.00 (पैंतीस हजार एक सो एक रूपया) के दान देनेवाले का नाम जिनालय में मार्बल पर लिखा जायेगा और विशेषांक में प्रकाशित किया जायेगा। जो कोई महानुभाव एक मंदिर को जीर्णोद्धार के लिए सहाय्यता करते है, तो कृपया संपर्क करे।

धर्मानुरागी बंधुओं से निवेदन करते है कि परमपूज्य जगदगुरू कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारूकीर्ती स्वामीजी, श्री क्षेत्र श्रवणबेलगोला मठ, इनके नेतृत्व मे जिनालयों की जीर्णोद्धार योजना मे दान देकर सहयोग प्रदान करे।

सरिता एम.के.जैन, चेन्नई
अध्यक्षा : गोम्मटेश्वर बाहुबली
महामस्तकाभिषेक महोत्सव समिति-18

संतोष पेंढारी, नागपुर
अध्यक्ष : मंदिर जीर्णोद्धार समिति,
गोम्मटेश्वर बाहुबली महामस्तकाभिषेक महोत्सव-18

एस.जितेंद्र कुमार, बेंगलूरू
कार्याध्यक्ष
गोम्मटेश्वर बाहुबली महामस्तकाभिषेक महोत्सव-2018
राष्ट्रीय स्तर दिगंबर जैन व्यवस्थापक समिति

एच.पी. अशोक कुमार, श्रवणबेलगोला
मुख्य संयोजक
गोम्मटेश्वर बाहुबली महामस्तकाभिषेक महोत्सव - 18

सतीश जैन (एससिजे)
नई दिल्ली
जनरल सेक्रेटरी

विनोद दोड्डण्णावर,
बेलगांव
सेक्रेटरी

सुरेश पाटील
सांगली
सेक्रेटरी

जय कुमार जैन, जयपुर
सक्रेटरी

महावीर गंगवाल, गुवाहाटी
सेक्रेटरी

प्रमोद जैन, दिल्ली
सेक्रेटरी

गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली महामस्तकाभिषेक महोत्सव
राष्ट्रीय दिगंबर जैन व्यवस्थापक समिति - 2018
प्रकाशक दिनांक : 21/08/2016, श्री क्षेत्र श्रवणबेलगोला

सामाजिक परिवर्तन और स्वतंत्रता आंदोलन में गजपंथ सिद्धक्षेत्र का योगदान

प्राचार्य डॉ. राजकुमार शहा
7, सर्वेश्वर सोसायटी, कॉलेज रोड,
नासिक-422005
मो. नं.9623074372

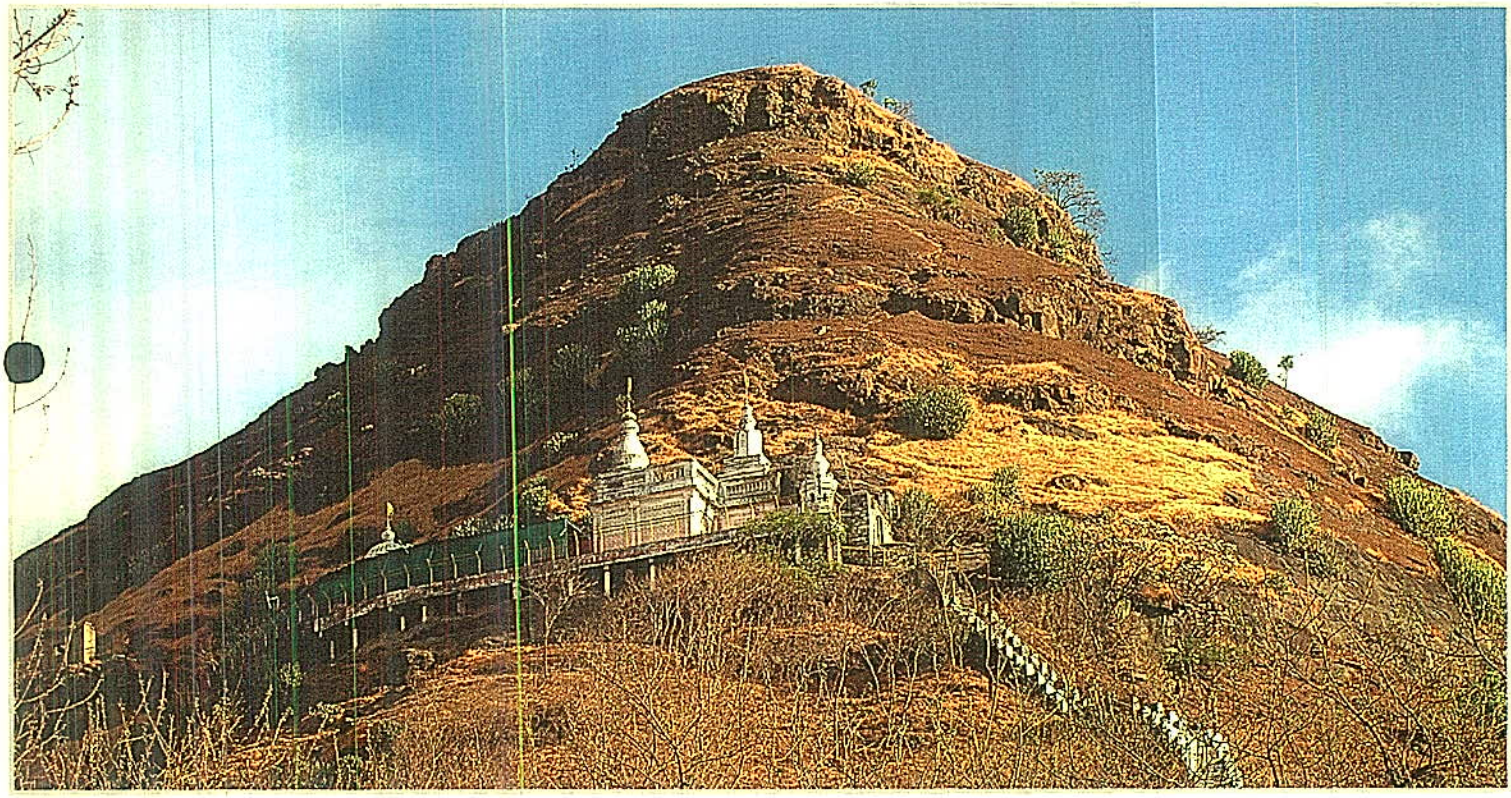

भगवान महावीर निर्वाण के उपलक्ष में हम हर दीपावली के दिन निर्वाणकाण्ड कहकर भगवान महावीर को अर्घ्य चढाते हैं। इस निर्वाणकाण्ड के अंदर गजपंथ सिद्ध क्षेत्र का उल्लेख आता है। गजपंथ सिद्ध क्षेत्र प्राचीन और जैनियों को प्यारा हैं।

गजपंथ सिद्धक्षेत्र पधारने के लिए नासिक आना पड़ता है। नासिक से यह क्षेत्र केवल छह किलोमीटर दूरी पर है। म्हसरुल नामक गाँव के पास यह सिद्धक्षेत्र है। नासिक से बस, ऑटो, टॅक्सी आदि वाहनों से हम गजपंथ पहुँच सकते हैं। यहाँ आवास-निवास सुविधा अच्छी है।

गजपंथ नाम कैसे पड़ा?

यहाँ से गजकुमार नामक मुनि का निर्वाण हुआ इसलिए यह सिद्धक्षेत्र गजपंथ नाम से जाना जाने लगा। कुछ लोग कहते है की जिस पहाड़ से सात बलभद्र और आठ करोड़ मुनि मोक्ष गये उस पहाड़ का आकार बैठे हुए गज जैसा दिखता है इसलिए इसे गजपंथ कहते है।

गजपंथ के प्राचीन उल्लेख

गजपंथ का सबसे प्राचीन उल्लेख निर्वाण काण्ड में आता है।

सत्तेय य वलभद्र जदुवणरिंदाण अठ्ठकोडीओ।
गजपंथे गिरिसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं।

इसका मतलब यहाँ से सात बलभद्र और आठ करोड़ मुनि मोक्ष को गये।

पाँचवी शताब्दी में आचार्य पूज्यपाद हो गये। उनके संस्कृत निर्वाणकाण्ड में गजपंथ का उल्लेख इस प्रकार आता हैं।

दण्डात्म के गजपथे पृथुसारयष्टो

कवि असग के शांतिनाथ पुराण में गजपंथ का उल्लेख गजध्वज इस नाम से आता है। कवि असग शांतिनाथ पुराण में लिखते है कि नासिक के उत्तर दिशा में गजध्वज पर्वत है।

पद्मपुराण में इस क्षेत्र का उल्लेख गजगिरि ऐसा किया है। गज जैसा दिखने वाला गिरि वह गजगिरि ऐसा पद्मपराण में उल्लेख आता है।

खोया हुआ गजपंथ

मध्ययुग में गजपंथ सिद्धक्षेत्र खो गया था। इस क्षेत्र की भूमि विस्मृति में चली गयी थी। क्योंकि 1680 से आगे इस भूमि के आसपास छत्रपति संभाजी महाराज के वक्त में मुगल और मराठा इनमें युद्ध चल रहा था। गजपंथ के पास रामशेज दुर्ग है। इस दुर्ग को जितने के लिए औरंगजेब ने बड़ी सेना भेजी। किंतु यह दुर्ग जीतना इतना आसान नहीं था कि जितना मुगल बादशाह औरंगजेब समझता था। यहाँ बहुत बारिश होती थी। इसलिए इस भूमि पर बड़ा जंगल था। औरंगजेब और मराठा सत्ता में हमेशा युद्ध होने के कारण जैन श्रावकों ने यहाँ

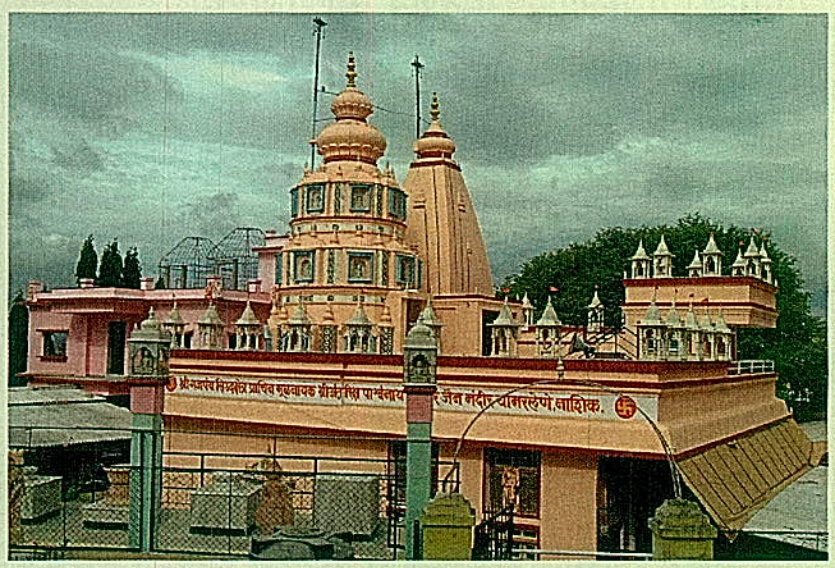

आना बंद कर दिया। इस कारण इस सिद्धक्षेत्र की भूमि विस्मृति में चली गयी।

भट्टारक क्षेमेंद्रकीर्ति की खोज

महाराष्ट्र में 1818 में ब्रिटिश सत्ता प्रस्थापित हुई। 19वीं शताब्दी के अंतिम दशक में यहाँ नागोर के भट्टारक क्षेमेंद्रकीर्ति आये। निर्वाणकाण्ड की सहायता से उन्होंने गजपंथ सिद्ध क्षेत्र की खोज की। म्हसरूल गाँव में उन्होंने जमीन खरीदी कर यह क्षेत्र ऊर्जितावस्था में लाया। गजध्वज पर्वत के ऊपर जैन तीन गुफाएँ है। उसमें चामरधारी मूर्ति अधिक होने के कारण ब्रिटिशों ने इस गुफाओं का नामकरण चामरलेणी ऐसा किया। उस दिन से ये पर्वत और गुफाएँ चामरलेणी नाम से जानी जाती है।

गजपंथ यह सिद्धक्षेत्र होने से जैन श्रावकों के लिए पवित्र भूमि है। मगर इस भूमि ने सामाजिक परिवर्तन और स्वतंत्रता आंदोलन में जो योगदान दिया वह बहुतही उल्लेखनीय है। उसके बारे में अधिक अभ्यास और चिंतन होना जरुरी है। इस लेख में मैंने उस पर थोड़ा प्रकाश डालने की चेष्टा की है।

शैक्षणिक परिवर्तन

समाज में यदि परिवर्तन लाना हो तो शिक्षा की जरुरत होती है। इस हिसाब से जैनों के प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ ने अपनी पुत्री ब्राह्मी को शिक्षित किया। इसके लिए उन्होंने ब्राह्मी लिपि तैयार की। इसका परिणाम यह हुआ की, आज भारत देश में सबसे ज्यादा जैन समुदाय शिक्षित दिखाई देता है। इस बारे में गजपंथ सिद्ध क्षेत्र का भी बड़ा योगदान रहा है। प्राचीन काल में जब राष्ट्रकूटों की सत्ता नासिक परिक्षेत्र में विद्यमान थी तभी गजपंथ में विरप्प नामक श्रावक ने जैन मुनि की दिक्षा ली। वह आगे चलकर आचार्य वीरसेन नाम से इतिहास में प्रसिद्ध हुअे। उन्होंने गजपंथ परिसर में एक विद्यापीठ की स्थापना कर उसे उत्कर्ष तक पहुँचाया। समाज में शिक्षा द्वारा परिवर्तन लाने का उन्होंने प्रयास किया था।

स्वतंत्रतापूर्व काल में आचार्य समंतभद्र महाराज के निर्देशन में यहाँ गुरुकुल चलाया जाता था। शांतिकुमारजी लोहाड़े के नेतृत्व में यह गुरुकुल चलाया जाता था। कुछ कारणवश इस गुरुकुल का कार्य खंडित हुआ। इस तरह यह भूमि शिक्षा के द्वारा प्राचीन काल से सामाजिक परिवर्तन में अपना योगदान दे रही है। आज भी यहाँ उसी संस्था का परिवर्तित रुप नई आवश्यकताओं के अनुसार इंग्लिश मीडिया स्कूल के रुप में शुरु है।

नारी जागृति की ओर

27 जनवरी से 29 जनवरी 1907 तक तीन दिवसीय मुंबई प्रांतिक सभा का अधिवेशन गजपंथ की भूमि पर संपन्न हुआ। इस अधिवेशन में नारी जागृति के लिए बहुत प्रयास किये गये। सेठ हिराचंद नेमचंद की सुपुत्री कंकुबाई और माणिकचंद झवेरी की सुपुत्री मगनबाई ने महिलाओं को यहाँ पर संबोधित किया। तारीख 29 जनवरी को आम सभा में कंकुबाई ने उत्तम व्याख्यान देकर जैन नारी हर क्षेत्र में आगे बढ सकती है इसका परिचय अपने उत्तम व्याख्यान द्वारा दिया।

काबुल के अमीर का अभिनंदन

इसी सभा में काबुल का (अफगानिस्तान) अमीर दिल्ली में आनेवाला था। उसके मेहनवाजी में गोवध करके कुछ अन्नपदार्थ बनाये जानेवाले थे। जैन समुदाय को इस बात की जानकारी होने पर उन्होंने काबुल के अमीर को यह जैन तत्त्व के विरुद्ध है ऐसा निवेदन काबुल को भेजा। इस निवेदन के उत्तर में काबुल के अमीर ने देहलीके मुसलमानों को गोवध मना कर दिया। यह जैनियों के अहिंसा सिद्धांत का विजय था। इसलिए गजपंथ सिद्ध क्षेत्र के अधिवेशन में मुंबई प्रांतिक सभा ने काबुल के अमीर को तार भेजकर अभिनंदन किया था। यदि समाज इकट्ठा हुआ तो देश-विदेश में कैसे परिवर्तन हो सकता है इसकी यह अच्छी मिसाल थी।

डॉ.बी. आर. आंबेडकर और आचार्य शांतिसागरजी महाराज

आचार्य शांतिसागर महाराज जी का गजपंथ सिद्धक्षेत्र दो बार चातुर्मास हुआ था। पहला चातुर्मास इ.स. 1936 और दूसरा चातुर्मास 1950 में हुआ था। 1936 में डॉ. बी. आर. आंबेडकर धर्मांतर करने का विचार कर रहे थे। तब उन्होंने इसी गजपंथ की भूमि पर आचार्य शांतिसागर महाराज से मुलाकात की और जैन धर्म में आने की इच्छा प्रकट की। तब आचार्य शांतिसागर महाराज ने इस बात का स्वागत किया। आप कभी भी जैन धर्म में प्रवेश कर सकते है ऐसा आचार्य शांतिसागर महाराज ने कहा। किंतु उनके साथ हजारों लोग जैन धर्म में आने वाले थे उनको आचार्य श्री ने मना कर दिया। क्योंकी हजारी लोगों के आचार-विचार शुद्धता की गारंटी कौन दे सकता था? कौन दे सकता था? ऐसा आचार्यश्री के मन में प्रश्न उत्पन्न होने से डॉ. बी.आर. आंबेडकरजी का जैन धर्म में प्रवेश होना रुक गया।

नासिक के पांजरापोल को दान

जैन धर्म में प्राणियों के बारे में एक सामाजिक दायित्व के दृष्टी से प्राणियों के तरफ ध्यान दिया जाता है। मुंबई प्रांतिक सभा में नासिक के पांजरापोल के बारे में भी चर्चा हुअी और नासिक के पांजरापोल का कार्य अच्छा चल रहा है ऐसा सुनकर श्री. माणिकचंद झवेरी ने गजपंथ सिद्धक्षेत्र की भूमि पर ही इस संस्था को एक सौ एक रुपये का दान देने की घोषणा करके अपने सामाजिक दायित्व का परिचय दिया।

सखारम वेणीचंद, फलटण को सुवर्णपदक

सखाराम वेणीचंद, फलटण को इसी सभा में सुवर्णपदक देकर उसका

उचित सन्मान किया। यह सुवर्णपदक सोलापुर के सेठ वालचंद रामचंद इनकी ओर से दिया गया। सखाराम वेणीचंद को सुवर्णपदक इसलिए दिया गया की वह अपना विवाह जैन पद्धति के अनुसार करना चाहते थे। यह बात कन्या के पिता के सामने नयी समस्या खडे करने वाली थी। क्योंकि एन वक्त में जैन पद्धती से विवाह कैसे संपन्न होगा? क्योंकि इसके लिए इतना समय नहीं था। तब सखाराम वेणीचंदने नितय विवाह संपन्न किया। यह सामाजिक और धार्मिक स्थितिकरण का अच्छा उदाहरण था। इसलिए गजपंथ की भूमि पर सखाराम वेणीचंद को सुवर्णपदक देकर उसका सन्मान किया गया।

जीवराज गौतमचंद ग्रंथमाला का वीजारोपण

जीवराज गौतमचंद जैन यह सोलापुर के रईस और विद्वान गृहस्थ थे। वह अपनी संपत्ती का समाज के लिए सदुपयोग करना चाहते थे। तब उन्होंने हिंदुस्थान के बहुत से विद्वानों को खत लिखकर मैं इस संपत्ति का सदुपयोग कैस करु इस बारे में उन्होंने सलाह ली। अंत में इस संपत्ति का उपयोग किसी माला की स्थापना कर उस ग्रंथमाला से जैन ग्रंथों को प्रकाशित करने की योजना निश्चित की गयी। उसका प्रारंभ गजपंथ की पवित्र भूमि पर ही हुआ। यह ग्रंथमाला जीवराज गौतमचंद जैन इस नाम से स्थापित हुअी, आज भी इस ग्रंथमाला का कार्य सोलापुर से बड़े उत्साह से शुरु है। यह गजपंथ क्षेत्र के पुण्यरुप भूमि किही देन होगी ऐसा लगता है।

स्वतंत्रता आंदोलन में गजपंथ सिद्धक्षेत्र का योगदान

जैन समाज और धर्म पहले से ही पारतंत्र के खिलाफ है। आत्मा आत्म्यैव गुरुरात्मन ऐसा जैन धर्म का तत्त्व है। याने आत्मा ही अपना गुरु है। अपने मार्गदर्शन के लिए इसे किसी परमगुरु की आवश्यकता नहीं है। इतनी स्वतंत्रता जैन धर्म में होने के कारण जब ब्रिटिश शासन हिंदुस्थान में स्थापित हुआ तब जैनियों ने हमेशा परतंत्र के विरुद्ध अपना आवाज बुलंद किया। लोकमान्य तिलक ने इस देश को चतु:सूत्री का मूलमंत्र दिया। स्वराज्य, स्वदेशी, राष्ट्रीय शिक्षण और बहिष्कार। इस चतु:सूत्री से लोगों ने देश में ब्रिटिशों का विरोध करना शुरु किया। 1907 में गजपंथ सिद्धक्षेत्र पर मुंबई प्रांतिक सभा ने नासिक र के स्वतंत्रता आंदोलन के एक प्रभावशाली ॲडव्होकेट थे। उन्होंने स्वदेशी के बारे में उत्स्फुर्त भाषण दिया। तब हजारो जैन लोगों ने स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग का व्रत लिया। बहुत लोगों ने स्वदेशी वस्त्र पहनने की प्रतिज्ञा ली। परदेशी शक्कर न खाने की यहाँ बात चली तब हजारो जैन लोगों ने परदेशी शक्कर का बहिष्कार डाला। पंडित गोपालदासजी बरैय्याने यहाँ पर स्वदेशी वस्तुका उपयोग और स्वदेशी वाणिज्य वृद्धिका प्रस्ताव सबके सामने रखकर सभा से मंजूर करवा लिया।

साड़े पाँच लाख का खजिना और गजपंथ

1942 में म. गांधीजी ने ब्रिटिशों के विरुद्ध चले जाव का नारा दिया और उनको देश छोड़ जाने को कहा। तब ब्रिटिश सरकारने उनको 10 अगस्त को सबेरे बंदी बना लिया। यह खबर लोगों को मिलते ही लोगों ने चले जाव आंदोलन चालू रखने का निश्चय किया। हिंदुस्थान के हर आदमी ने इस आंदोलन में भाग लेने की कोशिश की। कई महिने यह आंदोलन चालू रहा। मगर आंदोलन चलाने के लिए धन की आवश्यकता होती है। धन जुटाने के लिए धुलिया के लोगों ने सातारा के पत्री सरकार से संपर्क किया। वहाँ से बारह क्रांतिकारी जिसमें जी.डी. पाटील, नागनाथ नाईकवडी, रावसाहेब कळके, किसन मास्तर, धोंडीराम तुकाराम माळी, रामचंद्र भाऊराव पाटील आदि क्रांतिकारक धुलिया में आये। वडजाई गाव में वह फकिरा अप्पा देवरे के साथ रहे। फिर बोरकुंड के जंगल में कुछ दिन उनका वास्तव्य था। तभी उनको दयाराम नामक पोलिस कॉन्स्टेबल ने खबर दी की, 4 एप्रिल को साड़ेपाच लाख रुपये का सरकारी खजिना नंदुबार को अनाज खरीदने के लिए जा रहा है। यह खबर क्रांतिकारियों को मिलते ही क्रांतिकारियों ने 4 एप्रिल 1944 के दिन यह साड़ेपाच लाख रुपयों का खजिना चिमठाणे गाँव के पास लुट लिया।

अब आगे प्रश्न था की यह लुटा हुआ धन आटपाही (सातारा के पास) गाँव में कैसे भेज दिया जाये? क्योंकि यह खजिना दिन में ग्यारह बजे लुटा था। सब पोलिस सतर्क हुअे थे। तभी राजुलमती पाटील इस जैन क्रांतिकारक महिला ने यह संपत्ती आटपाड़ी ले जाने की जिम्मेदारी ली। वह बहुत ही तरुण स्त्री थी। उसने कहाँ की मैं जैन हूँ। मैं गजपंथ सिद्धक्षेत्र जाऊँगी। मैं जैन होने के कारण वहाँ मुझ पर कोई शक नहीं करेगा। वहाँ पहुँचने पर मैं प्रभु के दर्शन करुंगी। तबतक वहाँ खजिना पहुँच जाएगा। उस खजिने को मैं बराबर अपने साथ लेके आऊँगी। नियत समय पर खजिना गजपंथ में पहुँच गया। वहाँ से राजुलमती पाटील ने वह सारा पैसा आटपाडी के सरकार को सुपुर्द कर दिया। धन्य वह राजुलमती पाटील की जिसने यह दृढता दिखाकर स्वतंत्रता आंदोलन आगे बढाया।

इसी राजुलमती पाटील की कहानी बहुत ही दर्दनाक है। जब वह छोटी थी तब उसकी माँ खाना बना रही थी। तभी गलती से उसके हाथ से दिया नीचे गिर गया और उसमें उसके माँ की मौत हो गयी। इससे राजुलमती बहुत विचलित हुई। उसीने स्कूल जाना छोड़ दिया। ब्रह्मवर्य रखने के बात वह सोच रही थी तभी उसके पिताजी उसे बाहुबली में समंतभद्र महाराज के दर्शन के लिए ले गये। आचार्य समंतभद्र महाराज ने उसकी होशियारी देखके उसे आगे पढने के लिए सोलापूर के श्राविकाश्रम में भेज दिया। वहाँ पर भी वह चूप नहीं बैठी। 1942 का चले जाव आंदोलन शुरु होते ही वह सोलापूर के टिलक चौक में गयी और वहाँ पर उसने तिरंगा झेंडा लगा दिया। ब्रिटिशों ने उसे जेल भेज दिया। वहाँ से छूटने के बाद वह क्रांतिकारी पत्री सरकार में शामील हो गयी। और उसीने धुलिया में लूटी हुयी संपत्ती आटपाडी में ले जाने की जिम्मेदारी अपने उपर ली।

मुझे ऐसा लगता है की गजपंथ सिद्धक्षेत्र की भूमि बहुत ही पुण्यकारक भूमि होगी। अन्यथा सब जगह पोलिस सतर्क होते हुए भी साड़ेपाच लाख रुपये की लूट गजपंथ से आटपाडी ले जाना यह सीधी बात नहीं थी। इस सिद्धक्षेत्र की महिमा से ही यह सब कार्य हुआ होगा ऐसा मुझे लगता है। क्योंकि यह घटना जब यहाँ हो रही थी तब ब्रिटिश पार्लियामेंट में सब लोग पुछ रहे थे की भाई दिन में इतना खजिना लुटा जाता है तो हिंदुस्थान में किसका राज है। मेरे हिसाब से यह राज जैन धर्म के अनुसार महात्मा गांधीजी ने अहिंसात्मक मार्ग से जो स्वतंत्रता आंदोलन का सूत्रपात किया था इसीका परिणाम था और गजपंथ की भूमी इसकी सहाय्यकर्ती थी।

तारंगा सिद्धक्षेत्र

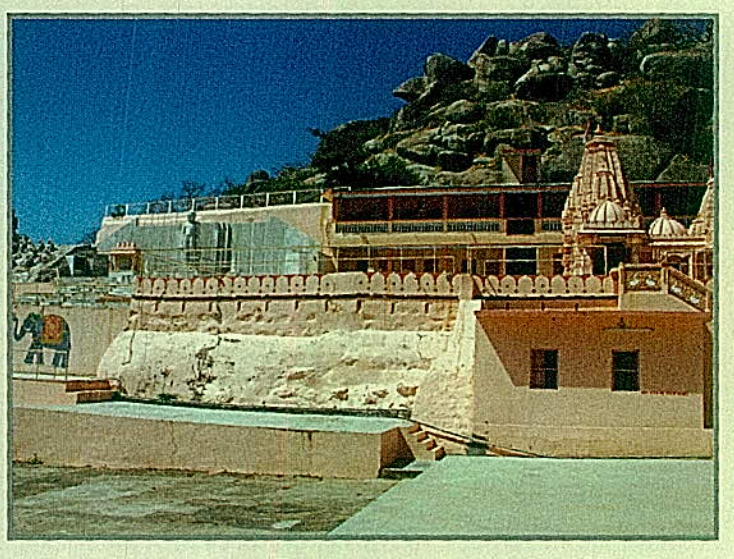

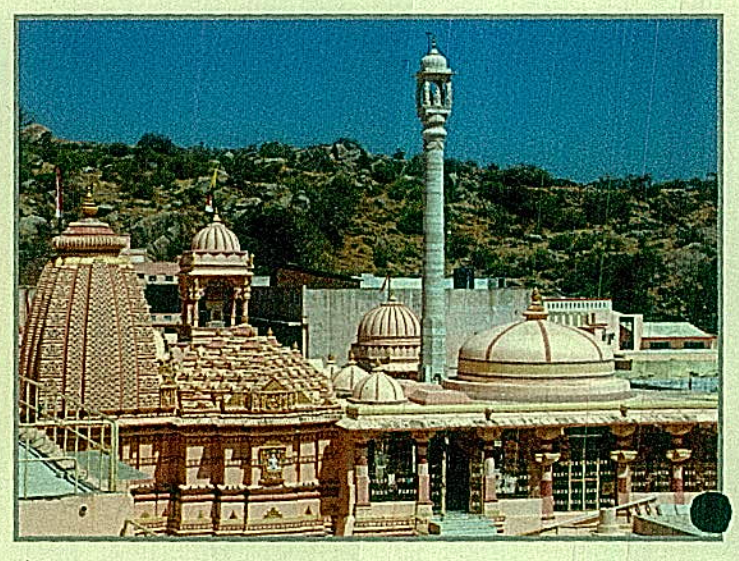

तारंगा सिद्धक्षेत्र गुजरात के मेहसाना जिले में धव स्थित है। यहां तारंगा नामक एक पहाडी है। यही पहाडी जैन परम्परा में सिद्धक्षेत्र के नाम से विख्यात है। यहीं से वरदत्त, वरांग, सागरदत्त आदि साढे तीन करोड मुनियों ने निर्वाण प्राप्त किया था। इसका प्राचीन नाम तारापुर था 195 वी शती के विद्वान भट्टारक गुणकीर्ति की मराठी रचना तीर्थवन्दना में इसका सर्व प्रथम उल्लेख तारंगा नाम से हुआ है। तारापुर नाम की पृष्ठभूमि में कुमारपाल प्रतिबोध में यह कारण दिया गया है कि यहां वच्छराज ने बोद्धें। की तारादैवी का मन्दिर बनवाया था। वच्छराज का समय आठवीं शताब्दी है। इस समय तक बौद्ध तान्त्रिक परम्परा विकसित हो चुकी थी। परन्तु इसके पूर्व जैन परम्परा में यह सिद्धक्षेत्र तारापुर के नाम से प्रसिद्ध रहा है। प्राकृत निर्वाण काण्ड (ल. प्रथम शती) में इसका उल्लेख इस प्रकार मिलता है-

वरदत्तो व वरंगो सायरदत्तो य तादवरणयर्र।
आछुट्टय कोडीओ विव्वाणगया णमो तेसिं ।।गाथा21।।

उत्तरकालीन गुणकीर्ति, ज्ञानसागर आदि जैन लेखकों ने तारंगा सिद्धक्षेत्र का खूब गुणगान किया है और उसके ऊपर कोरिशिता होने का उल्लेख किया है जहां से साढे तीन कोटि मुनियों ने मोक्ष प्राप्त किया था। विडम्बना यह हैं कि प्राकृत निर्माण काण्ड की ही गाथा संख्या 18 में इस कोठि शिला के अस्तित्व को कलिंगर्दश में बताया है। सम्भव है, धर्मकीर्ति और अकलंक के बीच दक्षिण में हुए शास्त्रार्थ का उल्लेख उत्तर काल में इसमें जोड दिया गया है।

जो भी हो, वर्तमान में तारंगा पर कोटिशिलानाम पर्वत है। यहां तलहटी में जैन धर्मशीला है। उसके पृष्ठभाग से इस पर्वत पर जाने का मार्ग है। ऊपर एक गुफा है, गुफा में वेदी बनी हुई है। आगे टोंक है जिसमें चरण विराजमान हैं। फिर आगे जाने पर गुफाएं मिलती हैं, बीच में एक टोंक शिला फलक पर तीर्थंकर नेमिनाथ की खडगासन प्रतिमा अपने भव्य परिकर के साथ प्रस्थापित है। इसपर उत्कीर्ण लेखक अनुसार इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा वि.सं. 1192 में चालुक्स सम्राट सिद्धराज के शासन काल में हुई। जिसके दरबार में आचार्य हेमचन्द्र का वर्चस्व था। इसी मूर्ति के समीप तीर्थंकर नेमिनाथ की छोटी-मोटी अनेक मूर्तियों प्रतिष्ठित है। इसी तरह आगे भी पार्श्वनाथ टोंक है। उसकी दूसरी ओर कोटिशिला का दूसरा भाग है जिसमें बाहुबली स्वामी की प्रतिमा विराजमान है। आगे एक अन्य टोंक पर तीर्थंकर मल्लिनाथ की परिकर सहित सुन्दर प्रतिमा प्रस्थापित है जिसकी प्रतिष्ठा 1192 में हुई थी इस तरह यह पर्वत ल. एक हजार वर्ष प्राचीन है जिससे हमारी जैन परम्परा जुडी हुई है। कोटिशिला और सिद्धशिला उसी के भाग हैं जो तारंगा और तारापुर नाम से प्रसिद्ध रहे हैं। इसकी तलहटी में ल. पन्द्रह भव्यजैन मन्दिर बने हुए है। एक शिला लेखके अनुसार वि.सं. 1192 में सम्राट जयसिंह के शासन काल में प्राग्वाट कुल केशनहलखन ने तारंगा पर्वत पर बिम्ब प्रतिष्ठा कराई थी। इस तात्पर्य है कि तबतक यह पर्वत दिगम्बर सम्प्रदाय के अधिकार में था बाद म उस पर श्वेताम्बर सम्प्रदाय का अधिकार हो गया।

अभी पुरातत्व के 2009 के 38 वें अंक में भी रावत की एक रिपोर्ट तारंगा जी के सम्बन्ध में प्रकाशित हुई है जिससे इस क्षेत्र के सन्दर्भ में नई जानकारी मिलती है। मिहिर योज (836-845 ई.) की ग्वालियर प्रशस्ति में अनर्त प्रदेश के गिरिदुर्ग का उल्लेख हुआ है जिसपर गुजरात प्रतिहार नरश नागमह (792-834 ई.) ने अधिकार किया था।

जैसा हुआ पीछे संकेत कर चुके हैं, तारंगा पर्वत पर बौद्ध देवी तारा की मूर्ति रही है। उसे आज धरणमाता के नाम से जाना जाता है। यहीं अवलोकितेश्वर पद्मपाणि की मूर्ति एक शिलापट्ट पर उत्कीर्ण है। इसे तारणमाता कहा जाता है। इसी जोगिद गुफा में चार ध्यानी बुद्धों की भी मूर्तियां उत्कीर्ण हैं। तारादेवी की मूर्ति का समय 8-9 वीं शती कहा जा सकता है। ये आरणमाता और तारणमाता के मन्दिर एक नाले के किनारे अवस्थित हैं।

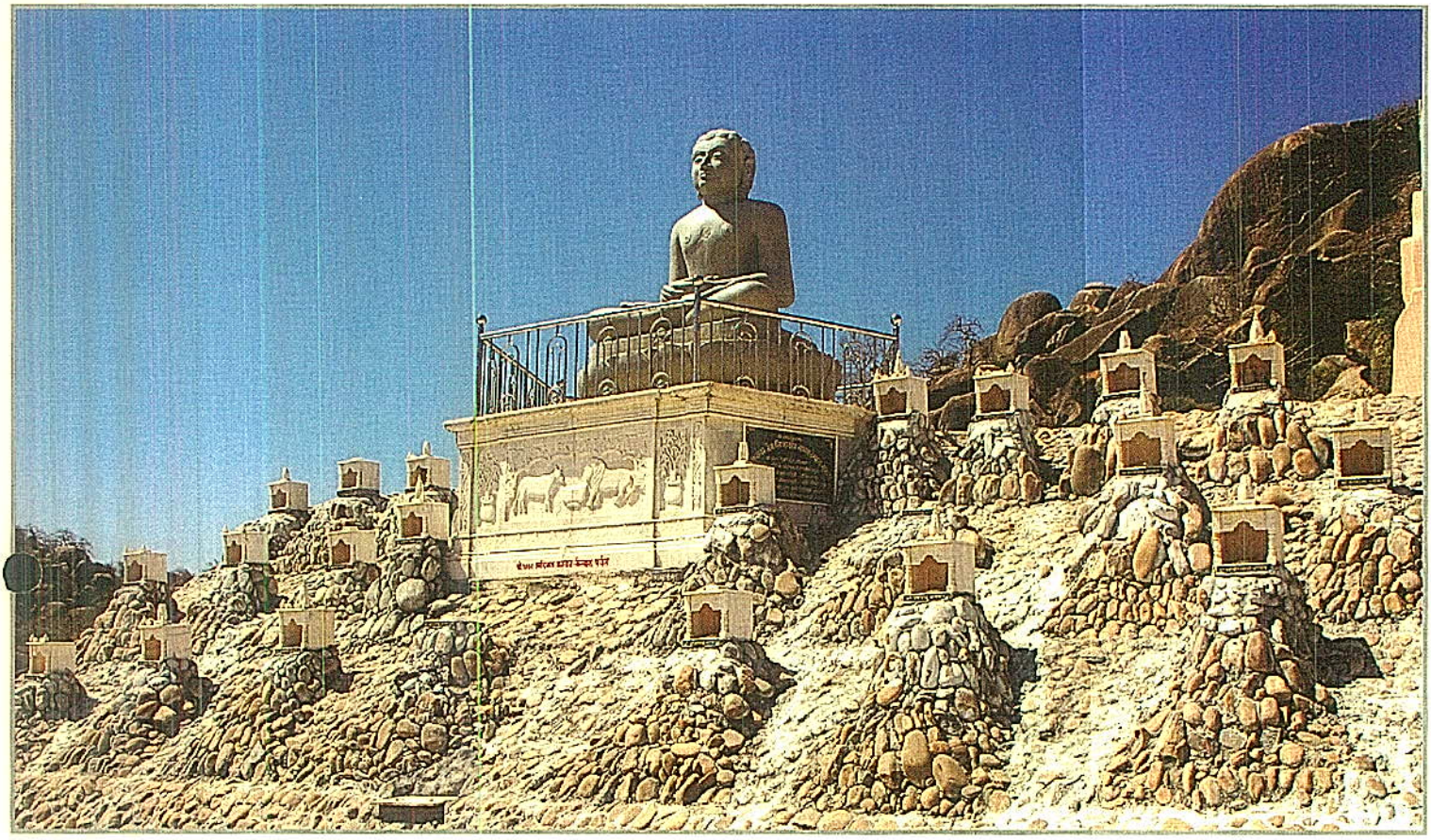

अमिताभ बुद्ध कमलासीन हैं। तारा देवी की मूर्ति के पादपीठ पर अश्व, गज और चक्र उत्कीर्ण हैं। की ई उसे वरद तारा और कोई उसे शुक्ला-कुरुकुल्ला के रुप में पहचाना करते हैं जिनका सम्बन्ध अमिताभ बुद्ध से है।

कुमारपाल प्रतिबोध (सोमप्रमाचार्यकृत वि.सं. 1241) के अनुसार जैनचार्य खपुराचार्य के समकाबीन बौद्ध सम्राट वच्छराज ने तारापुर में तारा देवी का मन्दिर बनवाया था। यह तारापुर तारंगा ही था। बाद में खपुराचार्य के मन्तों से राजा जैन धर्म में परिवर्त्ति हो गया और उसने तारंग पर्वत पर तीर्थंकर महावीर की यक्षी सिद्धायिका का मन्दिर बनवाया। यहीं अजितनाथ मन्दिर है जिसे सोलंकी वंशी कुमारपाल (1144.1174 ई.) ने निर्मित कराया था। इससे लगता है कि उत्तरकाल में तारंगा जैन संस्कृति बहुल सिद्धक्षेत्र बन गया। बौद्धधर्म का अस्तित्व यहां धूमिल पड गया। तारादेवी की पूजा धारणामाता के रुप में होती रही।

तारंगा पर्वत पर सिद्धशिला या मल्लिनाथ टोंक है। यहीं साबरमती और सरस्वती नदियां बहती हैं। अरावली पर्वत से सम्बद्ध इस तारंगा पहाडी पर अनेक टोंके हैं जिनमें सिद्धशिला की ऊंचाई सर्वाधिक है। इसी के समीय जोगिक टोंक, सोमदिया सोर और धगोलिया टोंक हैं। नाले के एक ओर तारणमाता और आरणमाता के मन्दिर हैं।

इसी सन्दर्भ में तारंग और बडनगर के विषय में जानलेना आवश्यक हैं। वडनगर में बौद्ध विहार और बौद्ध स्तूप उपलब्ध हुए हैं। यह वडनगर कदाचित बाद में अनर्तपुर कहा जाने लग्न हो। 16-17 वीं शती में वडनगर में दुर्ग बना दिया गया जिसके भीतर सिद्धशिला या मल्लिनाथ टोंक तथा अजितनाथ मन्दिर सयाविषृ हो गये। संभव है, दुर्ग की प्राचीन और पहले निर्मित हुई हो। सिद्धशिला की प्राचीन और भी प्राचीन हो सकती है। यहां प्राप्त ईटों और वर्तनों के आघाट पर इसकी प्राचीनता तृतीय चतुर्थशती ई.पू.की सद्ध हो सकती है।

सिद्धशिला की पश्चिम दिशा में तारणामाता मन्दिर है जो कदाचित हीनयान बौद्धधर्म से सम्बद्ध रहा है। यह मन्दिर सर्वाधिक ऊंचे टीले पर निर्मित है। यहां प्राप्त ईटों के प्रकार उसे और पुराना सिद्ध करते हैं। गुफा के सामने एक मण्डप है जो 11-12 वीं शती में निर्मित हुआ है। शायद यह स्तूप का भाग रहा हो। यहीं पदमासन मुद्रा में तथागत बुद्ध की एक भव्य मूर्ति भी मिलती है। वडनगर में प्राप्त मिट्टी के वर्तन उसे ल. चतुर्थ शताब्दी ई.पू. को सिद्ध करते हैं।

यह उल्लेखनीय है कि वडनार की सीमा में तारंगा आ जाता है। इसे ही अनर्तपुर कहा जाता होगा। अनेक पुर का गिरदुर्ग तारंगा का अभिन्न अंग रहा होगा। यह तारंगा मूलत: जैन परम्परा से सम्बद्ध रहा है। उत्तरकाल में उस पर बौद्धधर्म फैल गया। जैसें ही राजनीतिक परिस्थितियां बदलीं, तारंगा का रुप-स्वरुप बदल गया। उस पर जैन धर्म की अमिट छाप लग गई। और आज उसे जैनों का सिद्धक्षेत्र कहा जाने लगा।

मूकमाटी में आध्यात्मिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक चेतना

प्रो. डॉ. भागचन्द्र जैन भास्कर, नागपुर

व्यक्तित्व की कसौटी उसकी प्रतिभा और चरित्रनिष्ठा हुआ करती है। उसका कृतित्व और उसकी रचनाधर्मिता भी इन्हीं सद्गुणों में खिलती है, पलती-पुसती है। आचार्यश्री विद्यासागरजी ज्ञानी, ध्यानी और तपस्वी महात्मा हैं, वीतराग-पथ पर वेदाग् ससंघ चलने वाले मूक साधक हैं। उनका अध्ययन, मनन और चिन्तन काव्य प्रतिभा से अनुस्यूत होकर व्यक्ति और समाज को नया परिवेश देने का संकल्प करता है और व्याख्यायित करता है ऐसी श्रमण संस्कृति को जो विशुद्ध समतावादी और मानवतावादी है। आचार्यश्री का सारा संघ भी आचार-विचार का धनी है। उनका समूचा शिष्य-परिकर ज्ञानध्यान-साधना में अविरल निरत है। वीतरागता की प्राप्ति में उनका चिन्तन और मनन एक आदर्श सूत्र बन गया है। इस की पृष्ठभूमि में महर्षि. आचार्यश्री विद्यासागरजी का महनीय योगदान है।

'मूकमाटी' एक दार्शनिक महाकृति है जो आधुनिक सन्दर्भ में भी बेजोड़ शाश्वत मूल्यों को प्रस्थापित करती है। आज के उद्वेलित समाज में प्रस्फुटित विचारों के नये अंकुरों में विज्ञान अपनी पैठ जमा रहा है और भारतीयता के परिवेश में जीवन मूल्यों को परखने के लिये हमारी देहली पर दस्तक दे रहा है। आज की नई पीढ़ी में एक सवाल उभर रहा है कि क्या आध्यात्मिकता आधुनिकता के वैचारिक धरातल पर अपने आप को युगीन और कालबाह्य सिद्ध कर सकेगा ? या यों कहें कि क्या आध्यात्मिकता की उपेक्षा हमारे जीवन की यथार्थता को समझने के लिए घातक सिद्ध नहीं होगी ? यदि इस प्रश्न को उत्तरित करने में हमारा मन विधेयात्मकता की ओर झुकता है तो फिर प्रश्न उठेगा कि वह कौन-सा रूप हो सकता है जो हमें जीवन-मूल्यों की अर्थवत्ता को तर्कसंगत और बुद्धिसंगत बना दे और सहजता पूर्वक प्रतिभासित करा दे कि जीवन की इयत्ता भौतिकवादी मनोवृत्ति में नहीं बल्कि उससे प्रतिमुक्त त्याग के परिवेश में पनपी वीतरागी सद्वृत्ति में है। 'मूकमाटी' महाकाव्य इसी सद्वृत्ति को अंकुरित और प्रतिष्ठित करनेवाले दर्शन को अपने अनुपम अभिव्यञ्जना शिल्प के माध्यम से प्रस्तुत करता है और साहित्य-जगत् में कालजयी सिद्ध होने के लिए दावेदार बन जाता है। जाते हैं, पर वे समाज को एकदम बहिर्मुखी नहीं बना पाते। उसमें विद्यमान सुधारोन्मुखी चेतना धर्म-दर्शन की ओर झुकाती रहती है और आध्यात्मिक जाग्रति अप्रासंगिक नहीं हो पाती। नगरीकरण और तकनीकी विकास ने भी आधुनिकीकरण के पैर जमाने में अहं भूमिका अदा की है, पर आध्यात्मिक सन्तों ने मनुष्य में सुप्त स्वतन्त्रता प्राप्ति की यथार्थ भावना को भी उसी उत्साह के साथ जाग्रत किया है प्रवचन और साहित्यिक सृजन के माध्यम से, और रेखांकित किया है अपने सांस्कृतिक स्वर को, जिससे समाज को आधुनिक घात-प्रतिघात से बचाया जा सके।

कथ्य और तथ्य

''मूकमाटी'' का दर्शन सृजनशील दर्शन है। उसकी सृजनशीलता में उपादान और निमित्त कारण समन्वित रूप से उत्तरदायी हैं। यह उत्तरदायित्व चार भागों में विभाजित है। प्रथम भाग में मिट्टी का कुम्भकार से संसर्ग होता है। द्वितीय भाग में अहं का विसर्जन और समर्पण है। तृतीय भाग समर्पित के सामने आगत विविध परीक्षाओं से संबद्ध है तथा चतुर्थ भाग वर्गातीत अपवर्ग की प्राप्ति है। इस प्रकार समूचा महाकाव्य दर्शन से ओतप्रोत है। ये चारों भाग क्रमशः चतुर्पुरुषार्थ तथा चतुराश्रम व्यवस्था के प्रतीक माने जा सकते हैं। कवि ने इसमें जीवन की अनेक परछाइयों को नजदीक से देखा है और उनकी बहुरंगी प्रतिकृतियों को अनुभूति की पाँखों में संजोया है। कि इस पतित पर्याय की इतिश्री कब होगी ? सन्तान अपनी माँ से ही तो अपनी व्यथा- कथा कह सकती है खुले हृदय से। इस कथन में माटी अपनी उपादान शक्ति पूरे साहस के साथ माँ सरिता के सामने खोल देती है और उससे पद, पथ तथा पाथेय मांगकर अपने उत्थान सहयोग की अभ्यर्थना करती है। माँ की हृदयवती चेतना आत्मीयता के साथ संस्पर्शित होती है और पुलककर कह उठती है माटी से उस शाश्वत सत्य को, जिसमें भरी हुई रहती है उत्थान-पतन की अनगिनत संभावनायें, एक छोटे से बीज में भी, बशर्ते कि समयोचित खाद, हवा, जल उसे मिलता रहे। (मूकमाटी पृष्ठ ७)

आध्यात्मिक चेतना

आध्यात्मिक चेतना व्यक्तित्व के विकास का प्रतीक है, अहिंसा और संयम को अपने आचरण में उतारने का फल है जो साधक एक लम्बी साधना के बाद पा पाता है। दुःख के उद्वेलित महासागर से पार होकर सुख के प्रशान्त महासागर में गोते लगाने के लिए निर्जरापेक्षी होना आवश्यक है और निर्जरापेक्षी वही हो सकता है जो विधायक भावों का विकास कर स्वानुभूति का रसास्वादन कर ले। ये विधायक भाव हैं - मैत्री, प्रमोद, कारुण्य और माध्यस्थ भावाये चारों भाव अध्यात्म साधना की कसौटियाँ हैं जिनपर कसकर साधक के अनासक्त भाव की तरतमता का अन्दाज़ लगाया जा सकता है।

मूकमाटी का मूल उद्देश्य व्यक्ति की आध्यात्मिक चेतना को जाग्रत करना और उसको साधना के माध्यम से विकसित करना रहा है। जैन-श्रमण साधना के धनी होते हैं, आचार-विचार के पक्के होते हैं। उनकी समूची चर्या में वीतरागता भरी रहती है, स्व-पर कल्याण के भाव सने रहते हैं जो मन को अमन कर देते हैं और संकल्प को दृढ़ बना देते हैं। संकल्प की दृढ़ता से साधक आस्था और ज्ञान तथा आचरण की समीचीनता को परखने की आत्मशक्ति जाग्रत कर लेता है और हर पड़ौसी स्वयं अपने पड़ौसी से आत्मीयता भरे स्नेह के संस्कार में रहकर बात करने लगता है। उसका पर्यावरण विशुद्ध होने लगता है और आसपास का वातावरण सहज और सरल हो जाता है। उसके हर कोने से आध्यात्मिकता झाँकने लगती है।

रूपान्तरण प्रक्रिया

आध्यात्मिक चेतना एक रूपान्तरण प्रक्रिया है जहाँ साधक सन्तों का समागम

कर अपने व्यक्तित्व में साधना के सूत्र जोड़ता और संसार की वास्तविकता को अपनी सिन्दूरी आँखों से देखकर प्रज्ञा भाव से पदार्थ की तह तक पंहुचकर स्वयं की यथार्थता को समझने का प्रयत्न करता है। स्वयं को इस स्थिति में पहुँचाने का तात्पर्य है स्वयं के संस्कारों में परिवर्तन लाने का संकल्प कर लेना। स्वभाव संस्कारजन्य होता है और वह अपरिवर्तनीय नहीं होता। यदि कुसंगतिवश व्यक्ति के संस्कार बुरे हो गये तो वह सारी ज़िन्दगी मन से संतप्त होता रहेगा, झुलसता रहेगा और आंतरिक वृत्तियोंको कष्ट देता हुआ मानसिक प्रताड़ना सहता रहेगा। जब भी उसे सोचने का समय मिलेगा, वह उस प्रताड़ना से मुक्त हो जाने की राह पर भी चलना चाहेगा। यह चाह विशिष्ट चेतना के जागरण का सूत्र है जहाँ वह अपने पूर्वकृत दुष्कर्मोंऔर बुरे संस्कारों पर विलाप करता है, दुःख का अनुभव करता है। इसी चेतना से उसमें रूपान्तरण की प्रक्रिया शुरू हो जाती है, मैत्री, प्रमोद, कारुण्य के भाव जाग्रत हो जाते हैं और सृजनात्मक चेतना का प्रस्फुटन हो जाता है।

इस सृजनात्मक चेतना के जागरण में वातावरण की अहं भूमिका रहती है। वातावरण यदि पवित्र मिल जाये, संगति यदि अच्छी हो जाये तो हमारे अवचेतन मनमें पड़े हुए संस्कार प्रतिशोधात्मक भाव और प्रतिक्रियात्मक तत्त्व उभर उठेंगे और वे हमारी परिष्कृत चेतना से विगलित हो जायेंगे। संस्कार की गहरी पाँखें एक-एक कर बिखर जायेंगी। दोषों का अंबार धीरे-धीरे ढ़ह जायेगा। काम-क्रोधादि विकार भाव शनैः-शनैः विराम ले लेंगे और हमारे जीवन में एक नयी ज्योति प्रवेश कर जायेगी। इस ज्योति में होगी आत्मानुशासन की क्षमता, श्रद्धा का जागरण, समता, मानवता, संयम और तपस्या का परिवर्तन, सम्यक् आचरण का पोषण जो श्रमण संस्कृति की मूलभूत विशेषतायें हैं।

श्रमण संस्कृति मानवतावादी संस्कृति है जिसमें व्यक्ति को आध्यात्मिक शिखर की सर्वोच्च चोटी पर पहुँचने की पूर्ण स्वतन्त्रता दी गई है। वहाँ जाति, वर्ण, लिंग जैसा कोई भी व्यवधान विकास के लिए बाधक नहीं माना गया है और न ही किसी ईश्वर विशेष के आँचल को पकड़ने की होड़ है। न किसी तरह के अवतारवाद की कल्पना है और न धर्म में किसी भी प्रकार की हिंसा को प्रश्रय दिया गया है। जैन श्रमण परम्परा तो वस्तुतः पूर्णतः विशुद्धतावादी, परम आत्मवादी, समतावादी और श्रमवादी परम्परा है जिसमें प्राणी मात्र की भलाई पर पूरी तरह से विचार किया जाता है और उसके जीवन के संस्कारों को सुसंस्कृत करने का मार्ग प्रशस्त बना दिया जाता है।

साधु का चरित्र एक खुली क़िताब है। श्रावक उसे आदर्श मानकर अपने चरित्र का निर्माण करता है, इसलिए दोनों संस्थाओं को सजग रहना आवश्यक है। दोनों एक दूसरे के परिपूरक हैं। साधु के माध्यम से यदि श्रावक सही श्रावक बन जायें तो साधु के सत्संग का और उसके वर्षावास का इससे अधिक औचित्य और क्या हो सकता है ? यह तो वस्तुतः संस्कार यज्ञ है जिससे हम अपने संस्कारों को जागृत कर, ध्यान साधना कर जीवन निर्माण के सूत्र खोज सकें। सन्तों के चातुर्मास का यही महत्त्वपूर्ण फल है।

आचार्यश्री ने ''मूकमाटी'' के माध्यम से ऐसे वर्षवास काल में सन्तों के समागम की उपयोगिता पर प्रकाश डाला है और रूपान्तरण की प्रक्रिया में उसकी सार्थकता को सन्निहित किया है।

आध्यात्मिक चेतना

श्रमण संस्कृति यद्यपि मूलतः स्वःपुरुषार्थवादी संस्कृति है पर व्यवहार में वह अपने परम वीतराग इष्टदेव के प्रति श्रद्धा और भक्ति की अभिव्यक्ति से विमुख नहीं रह सकी। इस संदर्भ में आवश्यक क्रियायें आध्यात्मिक चेतना को जाग्रत करने के लिए महत्त्वपूर्ण साधन मानी जाती हैं। जो कषाय, राग, द्वेष आदि के अधीन नहीं होता वह अवश कहलाता है। उस जितेन्द्रिय अवश का जो अवश्यकरणीय आचरण है वह आवश्यक है। अर्थात् व्याधि आदि से ग्रस्त होने पर भी इन्द्रियों के वशीभूत न होकर दिन-रात जिन्हें किया जाना चाहिए उन्हीं को आवश्यक कहते हैं। ये आवश्यक-कर्म श्रावक और साधु दोनों के लिये संयोजित हुए हैं, कसाय पाहुड (प्रक.८२ पृ.१००) में दान, पूजा, शील और उपवास को श्रावक का धर्म माना है। आचार्य कुन्दकुन्द स्वामीऔर जटासिंहनन्दि ने उपवास के स्थान पर तप नाम देकर इन्हीं को स्वीकार किया है। उत्तरकाल में इन्हीं का विकास कर आचार्यों ने षट्कर्मों की स्थापना की। भगवज्जिनसेनाचार्य, सोमदेव और पद्मनन्दि ने जिनपूजा, वार्ता, दान, स्वाध्याय, संयम और तप को षट्कर्म कहा तथा अमितगति ने सामायिक, स्तवन, वन्दना, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान और कायोत्सर्ग इन छह को आवश्यक क्रियाओं में गिना है। रयणसार (गाथा १५३) में समूची श्रावक क्रियाओं की संख्या ५३ बतायी है, इन्हीं आवश्यक क्रियाओं को गहराई से पालना साधु के लिये भी आवश्यक माना गया है। मूलाचार (गा.५१६) भगवती आराधना (११६), राजवार्तिक (६.२२), उपासकाध्यन, अनगार धर्मामृत (८.१७) आदि ग्रंथों में ये आध्यात्मिक छह आवश्यक इस प्रकार मिलते हैं- सामायिक, चतुर्विंशतिस्तव, वंदना, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान और कायोत्सर्ग। आचार्य अमितगति आदि चिन्तकों ने साधु की इन षडावश्यक क्रियाओं को श्रावक के साथ भी जोड़ दिया। पर स्वाध्याय को इन क्रियाओं में से बाहर क्यों कर दिया गया ? यह प्रश्न उभरकर सामने आ जाता है। वाचना, पृच्छना, अनुप्रेक्षा, आम्नाय और धर्मोपदेश ये पाँच भेद स्वाध्याय के माने गये हैं। इनके माध्यम से साधक आगमाभ्यास करके आत्मध्यान करता है। लगता है, उत्तरकाल में शील के स्थान पर वार्ता, स्वाध्याय और तप रखा गया है। बाद में वार्ता के स्थान पर गुरुसेवा आयी और सोमदेव ने देवपूजा, गुरु उपासना, स्वाध्याय, संयम, तप और दान को षट्कर्म के रूप में प्रस्थापित किया। परन्तु साधुओं के षडावश्यकों में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। श्रावकों के षट्कर्मों में से स्वाध्याय को यहाँ अलग अवश्य कर दिया। यह कदाचित् इसलिए हो कि साधु सम्प्रदाय से यह आशा की जाती है कि वह सर्वप्रथम आगम का पूर्ण ज्ञानी हो। उस स्थिति में उसे फिर स्वाध्याय की आवश्यकता उस रूप में नहीं रहती। उसका अधिक झुकाव हो जाता है अर्हद्भक्ति की ओर। शायद इसीलिए आशाधरजी ने कहा है कि जो साधु

निरन्तर अर्हन्त भगवान् के ध्यान में लीन रहता है उसके ''अर्हन् शं वो दिश्यात्'' तथा ''सदास्तु व: शान्ति:'' इत्यादि वचनों को भी स्वाध्याय में गिना जाना चाहिए अर्थात् स्वाध्याय के स्थान पर चतुर्विंशतिस्तव रखा गया है साधु के लिए। निर्ग्रन्थ अवस्था में ग्रन्थों की आवश्यकता ही कहां है ? वहाँ तो कर्मनिर्जरा के लिए तप अधिक आवश्यक है। स्वाध्याय उसी का एक अंग है। मूकमाटी में स्पष्टरूप से षट्कर्मों और षडावश्यकों का उल्लेख नहीं हुआ है पर यत्र तत्र जिनस्तुति (मूकमाटी, पृष्ठ ३१२) गुरूपासना, प्रतिक्रमण, कायोत्सर्ग, प्रत्याख्यान आदि का वर्णन काव्यात्मक रूप से अवश्य हुआ है जिसे हम यथास्थान देख चुके हैं। स्व-पर का ज्ञान होना इसी का फल है

'स्व' को स्व के रूप में, / पर को पर के रूप में जानना ही सही ज्ञान है, और 'स्व' में रमण करना सही ज्ञान का 'फल' है। (मूकमाटी पृष्ठ ३७५)

नवधा भक्ति

मूक माटी के तृतीय-चतुर्थ खण्ड में दाता और श्रमण की विशेषतायें दी गई हैं (मू.मा.पृष्ठ३२६) जिनका उल्लेख हम पहले कर चुके हैं। चतुर्थ खण्ड में नवधाभक्ति के साथ उसकी आहार प्रक्रिया का विस्तृत वर्णन है (मू. मा. पृष्ठ ३२३) वसुनन्दि श्रावकाचार (२२६-२३१) में यह नवधा भक्ति इस प्रकार दी हुई है-१, पात्र को अपने घर के द्वार पर देखकर अथवा अन्यत्र से विमार्गणकर हे स्वामिन् नमोऽस्तु ! नमोऽस्तु ! नमोऽस्तु ! अत्र ! अत्र ! अत्र। तिष्ठ, तिष्ठ, तिष्ठ, कहकर प्रतिग्रहण किंवा स्वागत करना, २. साधु से दो तीन हाथ दूर रहकर उनकी प्रदक्षिणा देकर उन्हें अपने घर में लेजाकर निर्दोष तथा उच्च पीठ पर बैठाना, ३. उनके चरणों को धोना, ४. पवित्र पादोदक को सिर में लगाकर पुन: जल-गन्ध-अक्षत-पुष्प-नैवेद्य-दीप-धूप और फलार्घ से पूजन करना, ५. चरणों के समीप पुष्पांजलि क्षेपण कर वन्दना करना ६. आर्त रौद्र ध्यान छोड़कर मन-शुद्धि करना ७. निष्ठुर और कर्कश आदि वचन त्याग कर वचन-शुद्धि करना ८. विनीत अंग से कायशुद्धि करना और ९. चौदह मल दोषों से रहित, यत्न से शोधकर संयमी जन को आहार देना। हे स्वामिन् मनशुद्धि, वचनशुद्धि, कायशुद्धि आहार जल शुद्ध है, हे स्वामिन् अंजलि मुद्रा छोड़कर भोजन ग्रहण कीजिए इन शब्दों के साथ आहार दिया जाता है। (पृ.३२६)

इसी प्रसंग में स्वस्थ ज्ञान ही अध्यात्म है (मू. मा. पृष्ठ २८८) पात्र, दान, अतिथि सत्कार (मू. मा. पृष्ठ ३००-१) पाणिपात्री, हंस-परमहंस विशेषतायें (मू. मा. पृष्ठ ३००-३०४) सप्त स्वरों का भावसंगीत (मू. मा. पृष्ठ ३०५) दान (मू. मा. पृष्ठ ३०७) स्वास्तिक अर्थ (मू. मा. पृष्ठ ३०९) आहार प्रक्रिया (मू. मा. पृष्ठ ३४४) इन्द्रियवर्णन (मू. मा. पृष्ठ ३२८) आहारवृत्ति (मू. मा. पृष्ठ ३३३) उपदेश (मू. मा. पृष्ठ ३४४) कर्म की प्रखरता (मू. मा. पृष्ठ ३४७) सन्त समागम (मू. मा. पृष्ठ ३५२) वैराग्यदर्शन (मू. मा. पृष्ठ ३५३) संस्कार (मू. मा. पृष्ठ ३५७) चरणरज (मू. मा. पृष्ठ ३५८) स्वर्ण-माटी कलश संवाद (मू. मा. पृष्ठ ३५६-३७२) झारी (मू. मा. पृष्ठ ३७२) माटी की समता (मू. मा. पृष्ठ ३७८) दमन साधना (मू. मा. पृष्ठ ३९१) आरोग्य लाभ (मू. मा. पृष्ठ ३९५) पथ्यापथ्य (मू. मा. पृष्ठ ३९७) माटी से उपचार (मू. मा. पृष्ठ ४०५-९) श्रीफल (मू. मा. पृष्ठ ३१०) दाता के गुण (मू. मा. पृष्ठ ३१७) क्षुधा (मू. मा. पृष्ठ ३२८) आदि प्रसंग भी उदाहरणीय हैं।

सापेक्षता और सर्वोदयवाद

स्वाध्याय और षडावश्यकों के परिपालन से मन सापेक्षता की ओर बढ़ता है, दूसरे के विचारों के प्रति समादर भाव जाग्रत होता है और सर्वोदय की भावना का उदय होता है। सर्वोदयदर्शन आधुनिक काल में गाँधीयुग का प्रदेय माना जाता है। गाँधीजी ने रस्किन की पुस्तक ''अन टूम दी लास्ट'' का अनुवाद सर्वोदयदर्शन शीर्षक से किया और तभी से उसकी लोकप्रियता में बाढ़ आयी। यहाँ सर्वोदयदर्शन का तात्पर्य है- प्रत्येक व्यक्ति को लौकिक जीवन के विकास के लिए समान अवसर प्रदान किया जाना। इसमें पुरुषार्थ का महत्त्व तथा सभी के उत्कर्ष के साथ स्वयं के उत्कर्ष का सम्बन्ध भी जुडा हुआ है। गाँधीजी के इस सिद्धान्त को विनोबाजी ने कुछ और विशिष्ट प्रक्रिया देकर कार्यक्षेत्र में उतार दिया है।

अनेकान्तवाद और सर्वोदयदर्शन समाज के लिए वस्तुत: एक संजीवनी है। वर्तमान संघर्ष के युग में अपने आपको सभी के साथ मिलने-जुलने का अमोघ अनुदान है, प्रगति का एक नया साधन है, पारिवारिक विद्वेष को शान्त करने का एक अनुपम साधन है, अहिंसा और सत्य की प्रतिष्ठा का केन्द्र बिंदु है, मानवता की स्थापना में नींव का पत्थर है, पारस्परिक समझ और सह अस्तित्व के क्षेत्र में एक संबल है। उनकी उपेक्षा विद्वेष और कटुता का आह्वाहन है, संघर्षों की कथाओं का हिंसक प्लाट है, विनाश उसका क्लाइमैक्स है, विचारों और दृष्टियों की टकराहट तथा व्यक्ति-व्यक्ति के बीच खड़ा हुआ एक लंम्बा गैप वैयक्तिक और सामाजिक संघर्षों की सीमा को लांघकर राष्ट्र और विश्व स्तर तक पहुँच जाता है। हर संघर्ष का जन्म विचारों का मतभेद और उसकी पारस्परिक अवमानना से होता है। थोड़ा बुद्धिवाद उसका केन्द्रबिंदु है।

अनेकान्तवादी बुद्धिवादी होने का आग्रह नहीं करता। आग्रह से तो वह मुक्त है ही। पर इतना अवश्य कहता है कि बुद्धिनिष्ठ बनो। बुद्धिवाद ख़तरावाद है, पण्डितवाद है। परन्तु बुद्धिनिष्ठ होना ख़तरा और संघर्षों से मुक्त होने का अकथ्य कथ्य है। यही वास्तविक सर्वोदयवाद है। इसे जैनवाद कहना सबसे बड़ी भूल होगी। यह तो मानवतावाद है। जिसमें अहिंसा, सत्य, सहिष्णुता, समन्वयात्मकता, सामाजिकता, सहयोग, सद्भाव, और संयम जैसे आत्मिक गुणों का विकास सम्बद्ध है।

समाज और राष्ट्र का उत्थान भी इसकी सीमा से बहिर्भूत नहीं रखे जा सकते। व्यक्तिगत, परिवारगत, संस्थागत और सम्प्रदायगत विद्वेष की विषैली आग का शमन भी इसी के माध्यम से होना संभव है। अत: सामाजिकता के मानदण्ड में अनेकान्तवाद और सर्वोदयदर्शन खरे उतरते हैं। आइन्सटीन ने इसी दर्शन को विज्ञान पर खड़ा कर दिया है।

वस्तुत: जीवन और सत्य के बीच अनेकान्तवाद एक धुरी का काम करता है

और सर्वोदयदर्शन उसके पथ को प्रशस्त करता है। दोनों दर्शन अनुस्यूत होकर जीवन को विशद, निश्चल, समरस, निरुपद्रवी तथा निर्विवादी बना देता है। जीवन की आध्यात्मिकता और सामाजिकता के उत्कर्ष की ऊचाईयों को छूने के लिए उसकी उपेक्षा न उचित है और न संभव ही। मूकमाटी में इसी अनेकान्तवाद और सर्वोदयवाद की प्रस्तुति बड़े ही सुन्दर ढंग से हुई है। यही स्वस्थ ज्ञान अध्यात्म है (मू.मा., पृ.२८८) तभी तो उसमें नया संगीत खिलता है और सूक्ष्म से सूक्ष्म विचारों को तौल दिया जाता है निष्पक्षताके साथ'(मूकमाटी, पृष्ठ १४२)।

भक्ति और मन्त्र परम्परा

इस सापेक्षता और सर्वोदयवाद की बात करने वाले जैनाचार्यों में प्रमुख मानतुंग भक्तिप्रवण आचार्य थे। आचार्य सिद्धसेन के कल्याण मंदिर स्तोत्र की परम्परा उनके सामने थी। भगवत् अनुग्रह भक्ति के साथ जुड़ चुका था। उस भक्ति में परमात्मा के प्रति अनुराग था पर उस अनुराग से वीतरागी परमात्मा को कोई मतलब नहीं था। भक्त अपनी सहजसिद्धि के लिए अवश्य परमात्मा की भक्ति करके शुभ कर्म करने की प्रेरणा लेता है और अन्तःकरण शुद्ध कर लेता है। उदाहरणार्थ कल्याण मंदिर स्तोत्र ४२ में इस स्थिति को स्पष्ट किया गया है कि हे प्रभो ! आपकी स्तुतिकर मैं आपसे अन्य किसी फल की आकांक्षा नहीं करता। बस, केवल यही चाहता हूँ कि भव-भवान्तरों में सदा आप ही मेरे स्वामी रहें जिससे आपको अपना आदर्श बनाकर अपने को आपके समान बना सकूँ यद्यपि वीतरागी देव को किसी की स्तुति प्रशंसा या निंदा से कोई प्रयोजन नहीं है फिर भी उनके गुणों का स्मरण करने से भक्त का मन पवित्र हो जाता है।

इसलिए जैन भक्ति पर यह दोषारोपण सही नहीं है कि वह ईश्वरवाद पर झुकी हुई है। किसी भी स्तोत्र में सृष्टिकर्तृक ईश्वर का रूप प्रतिबिम्बित नहीं होता। परमात्मा की परम विशुद्ध अवस्था का वर्णन करते हुये उसे पाने की आकांक्षा को अभिव्यक्त करने की पृष्ठभूमि में ही जैन भक्ति का उद्भव और विकास हुआ है। आचार्यश्री ने भी आचार्य समन्तभद्र और मानतुंग के चरण चिन्हों पर चलकर मूकमाटी में जिनदेव के प्रति अपनी भक्ति प्रदर्शित की है और ईश्वरवाद को नकारा है। इतना ही नहीं, उन्होंने न भुक्ति की चाह की और न मुक्ति की, बस यही भावना व्यक्त की है कि संकट में कभी भी आह की तरंग भी न उठे (मूकमाटी पृष्ठ २८४)।

भक्ति तन्त्र से मन्त्र परम्परा का उद्भव हुआ। भक्ति के प्रवाह में आकर साधक परमात्मा की स्तुति करता है और उस स्तुति में वह वाचाल हो उठता है। मन्त्र उस वाचालता को कम करता है और मन को एकाग्र करके आध्यात्मिक अनुभव के पाने का प्रयत्न करता है। नामस्मरण, श्रवण, मनन, चिन्तन की पृष्ठभूमि में मन्त्र की उत्पत्ति होती है, मांगलिक कार्य करने के लिए इष्टदेव की स्तुति होती है, समास पद्धति का आधार लेकर भगवान का अनुचिन्तन होता है और फिर मंगलवाक्य के रूप में मन्त्र की रचना हो जाती है। इस दृष्टि से णमोकारमन्त्र पर प्रथमतः विचार किया जाना आपेक्षित है। उसमें द्वादशांग श्रुत और परमेष्ठी का समूचा रूप सन्निहित है। साधक इस मन्त्र से आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त करता है और सम्यक्त्व प्राप्तकर मोक्षसाधना में जुट जाता है। इसलिए इसे महामंगल मन्त्र कहा गया है। इसमें उपद्रवों को प्रशान्त करने की अनन्तशक्ति और स्रोत है, ज्ञान ज्योति को प्रज्ज्वलित करने की प्रगाढ़ क्षमता है। तन्त्र परम्परा का भी विकास यहीं से हुआ है जैन संस्कृति में।

णमोकारमन्त्र और आध्यात्मिकता

प्रत्येक संस्कृति में किसी न किसी रूप में मंत्र-तंत्र परम्परा रही है। जैन संस्कृति यद्यपि ईश्वर कर्तृत्व को नहीं मानने से निरीश्वरवादी है फिर भी उसमें श्रद्धा और भक्ति का स्थान कम नहीं है। मंत्र तत्त्व भक्ति की भूमिका पर फलित होता है और सदाचरण उसकी पृष्ठिभूमि में काम करता है। जैन संस्कृति का णमोकार मंत्र ऐसा ही महामन्त्र है जिसमें श्रद्धा, भक्ति, ज्ञान,

आचार सब कुछ सम्यक् रूप से समाहित है। साधना मार्ग में वह एक मील का पत्थर है जो अपवर्ग की प्राप्ति में दिशादान का काम करता है, सम्यक्त्व और समत्व को प्रवाहित करता है, स्वस्थ मानसिकता और सजगता से आबद्ध करता है।

आचार्यश्री ने मूकमाटी में णमोकार मन्त्र के नव बार उच्चारण करने का उल्लेख किया है, शाश्वत शुद्ध तत्त्व को स्मरण में लाकर (मू.मा.पृ. २७४) अवा कार्य को प्रारम्भ करने के पूर्व। ओंकार भी णमोकार मन्त्र का एक अभिन्न अंग है जिसे विपत्ति के समय स्मृतिपथ में लाया जाता है (मू.मा.,पृ. ४४२)। इसी संदर्भ में मन्त्र-तन्त्र परम्परा का एक रूप यहाँ प्रस्तुत किया गया है जिसमें मन्त्रों से सात नीबू साधित होकर काली डोर के साथ बँधे हुए हैं (मूकमाटी, पृष्ठ ४३७)।

मन्त्र-तन्त्र परम्परा में बीजाक्षर का बड़ा महत्त्व है। अकार से लेकर क्षकार पर्यन्त मातृका वर्ण कहलाते हैं। इनका तीन प्रकार का क्रम है - सृष्टिक्रम, स्थितिक्रम और संहारक्रम। णमोकार मन्त्र में ये तीनों क्रम सन्निविष्ट हैं। इसलिए इस मन्त्र से मारण, मोहन और उच्चाटन तीनों प्रकार के मन्त्रों की उत्पत्ति हुई है। आत्मकल्याण तथा अष्टकर्म विनाश की भूमिका इसमें सन्निहित है। द्रव्यसंग्रह की ४८ वीं गाथा में इस महामन्त्र से उत्पन्न होने वाले अनेक मन्त्रों का उल्लेख किया है।

ककार से लेकर हकार पर्यन्त व्यंजन 'बीजसंज्ञक' हैं और अकारादि 'स्वर शक्ति' रूप हैं। मन्त्रबीजों की निष्पत्ति बीज और शक्ति के संयोग से होती है। आचार्यश्री ने श, ष और स बीजाक्षरों की शक्ति का उल्लेख किया है।

मूकमाटी का प्रारम्भ -स-श बीजाक्षरों से होता है और उसकी समाप्ति शान्त शब्द से होती है जो आदि-अन्त मंगल सूचक है (मूकमाटी, पृष्ठ १), (मूकमाटी, पृष्ठ ४८८)।

आचार्यश्री ने श, स और ष का विश्लेषण अपने ढंग से किया है। उन्होंने कहा- 'श' कषाय का शमन करने वाला है और शाश्वत शान्ति की पाठशाला है। 'स' सहज सुख का साधन और समता का अजस्र स्रोत है और 'ष' पाप पुण्य

शेष अगले अंक में.....

मध्यांचल कमेटी की अनूठी पहल

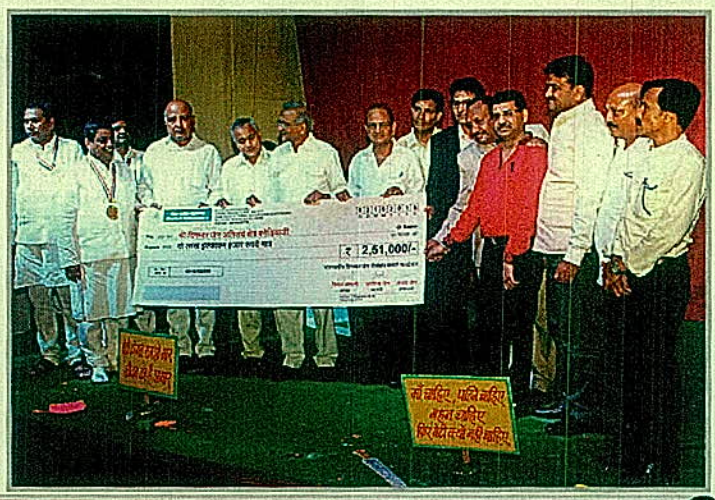

मध्यांचल कमेटी द्वारा एक अनूठी पहल आम श्रद्धालुओं को तीर्थक्षेत्र कमेटी से जोड़ने हेतु प्रारंभ की गई है,यह योजना तीर्थक्षेत्रों के सरंक्षण संवर्धन हेतु तीर्थ विकास निधि के नाम से प्रारंभ की जा रही है। यह जानकारी देते हुए मध्यांचल कमेटी के अध्यक्ष् श्री विमल सोगानी ने बताया कि एक संकल्प पत्र के माध्यम से इस योजना के सदस्य बनाकर उनके घर प्रतिष्ठान पर निकलने वाली अनुपयोगी पत्र पत्रिका समाचार पत्र प्रतिमाह की निश्चित तारीख को हमें प्रदान करना है। एक लोडिंग रिक्शा आपके घरों में जाकर यह सामग्री एकत्रित कर लेगा, इस योजना हेतु मुख्य संयोजक अशोक जैन, जिनेश झांझरी, प्रमोद पापड़ीवाल, कैलाश सेठी, सुरेंद्र कलशधर जी को बनाया है इसके अतिरिक्त नगर के जिनालयों के आधार पर क्षेत्रवार प्रतिनिधि इस योजना को क्रियान्वित करने हेतु बनाये हैं, 2 अक्टोबर के भव्य आयोजन में इस योजना का शुभारंभ हो चुका है, इस योजना से प्रभावित होकर प्रसिद्ध समाज सेवी श्री नविन जैन गाजियाबाद ने अपनी और से लोडिंग रिक्शा हेतु 2लाख 51 हजार की राशि की घोषणा की है। सभी ने इस योजना को सराहा है।

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मध्यांचल के अध्यक्ष् श्री विमल सोगानी ने बताया कि 2 ऑक्टोम्बर रविवार की शाम इन्दौर के लगभग 4000 धर्मालुओं की उपस्थिति में भव्य सांस्कृतिक संध्या संपन्न हुई, जिसमे इन्दोर नगर के सभी जिनालयों में से श्रेष्ठ 12 टीमो को चयनित कर उनके द्वारा धार्मिक व देशप्रेम पर आधारित नृ नाटिका का मंचन किया गया।

इस भव्य आयोजन में मध्यांचल कमिटी द्वारा प्रसिद्द अतिशय क्षेत्र बनेडिया जी पर पूज्य मुनि श्री प्रसन्न सागरजी महाराज की प्रेरणा से प्रसन्न सागर सभागृह हेतु 2लाख 51 हजार की राशि का चेक बनेडिया क्षेत्र कमेटी को प्रदान किया गया। इस भव्य आयोजन में तीर्थ क्षेत्र कमेटी के पूर्व राष्ट्रिय अध्यक्ष् श्री सुधीर जी जैन सिंघई, शाश्वत ट्रस्ट शिखरजी के महामंत्री श्री छितरमल जी पाटनी, व् श्री प्रेमचंद जैन प्रेमी कटनी, मध्यांचल कमेटी के अध्यक्ष् विमल सोगानी, महामंत्री श्री अरविन्द जी सिंघई, संरक्षक श्री संजय जैन मैक्स, कोषाध्यक्ष ड़ॉ संजय जैन इन्दौर के गणमान्य श्री निशांत जी समैया, डिप्टी कमिश्नर, श्री नविन जैन गाजियाबाद, श्री भरत जी मोदी, श्री आर के जैन रानेका, श्री अशोक जी बड़जात्या राष्ट्रिय अध्यक्ष दिगंबर जैन महासमिति की

उपस्थिति में बावन गजा तीर्थ क्षेत्र व् जैन समाज हेतु कराये गए सेवा कार्यो हेतु समाज सेवी श्री राजकुमार जी जैन मनावर को जैन रत्न अलंकरण से नवाजा गया, साथ ही इन्दोर समाज में सामाजिक कार्यो से अपनी विशिष्ट पहचान बनाने वाले दिगंबर जैन समाज के महामंत्री श्री सुरेंद्र जी बाकलीवाल को श्रेष्ठ सेवा सम्मान से सम्मनित किया गया।

इस गौरवशाली आयोजन में सांसद श्रीमती सविता ठाकुर धार संसदीय क्षेत्र, श्रीमती रंजना बघेल विधायक मनावर, श्री राज जी बाफना जिला भाजपा अध्यक्ष धार, पूर्व विधायक श्री अश्विन जोशी, पार्षद श्री दीपक जैन, श्री मानक जी सोगानी, श्री डी के जैन, श्री प्रदीप बड़जात्या, श्री होलास सोनी, श्री सचिन जैन, श्री अनिल जैन जेनको, श्री प्रशांत घाटे, श्री कुशल बाकलीवाल, श्री पारस पापड़ीवाल आदि उपस्थित थे। इस भव्य आयोजन में मध्यांचल कमेटी द्वारा मध्यांचल के 108 तीर्थों की संपूर्ण जानकारी युक्त बहुरंगी सचित्र पत्रिका मध्यांचल तीर्थदर्पण का विमोचन भी संपन्न हुआ, कार्यक्रम का कुशल संचालन डॉ संजय जैन ने किया, आभार मध्यांचल के अध्यक्ष् श्री विमल सोगानी ने माना।

श्री दिगम्बर जैन शिक्षा समिति एम. डी. जैन कालेज के प्रदीप कुमार जैन अध्यक्ष बने

जैन समाज की सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्था श्री दिगम्बर जैन शिक्षा समिति की आयोजित बैठक में प्रमुख उद्यमी एवं प्रसिद्ध समाजसेवी श्री प्रदीप कुमार जैन (पीएनसी) को सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुना गया। यह स्थान पूर्व अध्यक्ष श्रीमान स्वरूपचंद जी जैन (मारसन्स) के निधन के कारण रिक्त था। श्री दिगम्बर जैन शिक्षा समिति के अध्यक्ष का पद एक अति विशिष्ट एवं गौरवपूर्ण पद है, यह पद सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज का प्रतिनिधित्व करता है। श्री दिगम्बर जैन शिक्षा समिति जैन समाज की एक विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण संस्था है जिसके अन्तर्गत उत्तर प्रदेश में ख्याति प्राप्त श्री एम0 डी0 जैन कालेज जिसमें 3000 से अधिक विद्यार्थी विद्यार्जन करते हैं, सहित अन्य कई सामाजिक संस्थाऐं जैसे जैन साहित्य शोध संस्थान, श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, श्री महावीर दिगम्बर जैन होम्योपैथिक औषधालय आदि कार्यरत हैं। श्री महावीर दिगम्बर जैन इण्टर कालेज एक प्रतिष्ठित विद्यालय है। यह आगरा शहर के मध्य हरीपर्वत चौराहे पर स्थित है, इसमें एक विशाल खेलकूद का मैदान, तरणताल, विशाल ऑडीटोरियम भी है। प्रदीप जी पिछले 20 वर्षो से श्री महावीर दिगम्बर जैन इण्टर कालेज के मानद प्रबन्धक पद पर आसीन थे आपके कुशल प्रबन्धन में विद्यालय का चहुंमुखी विकास न केवल शैक्षिक स्तर पर बल्कि खेल, विज्ञान, संगीत, गायन के अतिरिक्त सामाजिक, नैतिक एवं धार्मिक विकास भी हुआ है। पिछले कई वर्षो से विद्यालय की हाईस्कूल एवं इण्टरमीडियेट परीक्षाओं को परिणाम शत–प्रतिशत रहा है और सर्वाधिक छात्र प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हो रहे है। विद्यालय के छात्र राष्ट्रीय स्तर पर विज्ञान, खेलकूद, एन.सी.सी., सांस्कृतिक आदि प्रतियोगिताओं में भाग लेकर अपनी प्रतिभाओं का प्रदर्शन कर विद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। विद्यालय के कई छात्र देश की सर्वश्रेष्ठ प्रशासनिक सेवा IAS, PCS, Engineering, Medical में गये हैं। विद्यालय परिसर स्थित श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर का भी बहुत महत्व है, यह अतिशयकारी मन्दिर है इसमें प्रमुख जैन संत देशभर से आते हैं और श्रृद्धालुओं में धार्मिक संस्कारों को अपने प्रवचनों के माध्यम से अभिसिंचित करते हैं। बाहर से जो भी जैन समाज के बन्धु पधारते हैं वह इस मन्दिर में भगवान शांतिनाथ जी के दर्शन करने अवश्य ही आते हैं। आगरा की जैन समाज के धार्मिक कार्यक्रम जैसे महावीर जयंती, पंचकल्याण आदि सहीं पर भक्तिभाव से सम्पन्न होते हैं। श्री जैन साहित्य शोध संस्थान में लगभग 2416 हस्तलिखित एवं 2700 मुद्रित ग्रन्थों के संकलन है जिनमें कुछ पाण्डुलिपियां एवं ग्रन्थ ताड़–पत्र के भी उपलब्ध हैं, यहां से अनेक विद्वानों ने जैनधर्म पर पीएचडी की है। श्री महावीर दिगम्बर जैन होम्योपैथिक औषधालय में आगरा एवं बाहर के रोगी इलाज करवाकर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

श्री प्रदीप कुमार जैन के श्री दिगम्बर जैन शिक्षा समिति के अध्यक्ष बनने पर सम्पूर्ण जैन समाज में हर्ष की लहर है। श्री प्रदीप कुमार जैन कुशल प्रशासनिक नेतृत्व क्षमता के धनी सबको साथ लेकर चलने वाले, समन्वय शिरोमणी, मृदुभाषी, धार्मिक एवं नैतिक संस्कारों से ओतप्रोत व्यक्तित्व हैं, आप भारतवर्ष की कई राष्ट्रीय स्तर की धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं में पदाधिकारी हैं। आप कई धार्मिक एवं सामाजिक ट्रस्टों के ट्रस्टी भी हैं जिनके माध्यम से आप निरन्तर धर्म एवं समाज के नैतिक विकास एवं संस्कारों के लिए कार्य कर रहे हैं। आपका व्यक्तित्व निर्विवाद है। उपरोक्त बैठक में श्री अखिल बरौलिया को सर्वसम्मति से श्री एम. डी. जैन इण्टर कालेज का प्रबन्धक चुना गया एवं डा0 जितेन्द्र कुमार जैन को सर्वसम्मति से श्री दिगम्बर जैन शिक्षा समिति का महामंत्री चुना गया।

युद्ध शांति की अनिवार्य शर्त

यहाँ जो भी राष्ट्र, धर्म और समाज से प्रेम करने वाला है वो सबके सब श्री नरेंद्र मोदी और भारतीय जनता पार्टी का समर्थक हैं पर इन समर्थकों में दो श्रेणियाँ है, एक वो है जिसके लिये राष्ट्र का गौरव, धर्म की प्रतिष्ठा और आने वाले वक़्त में देश की सुरक्षा अधिक महत्वपूर्ण है और दूसरी श्रेणी उनकी है जिनके लिये व्यक्ति और पार्टी अधिक महत्वपूर्ण है. इसलिये 18 जवानों के बलिदान के बाद देश के आक्रोश को अपने जलील तर्कों से दबाने की कोशिश कर रहें हैं कि युद्ध हुआ तो महंगाई बढ़ेगी, जानें जायेंगी, अर्थव्यवस्था चरमरा जायेगा वगैरह-वगैरह... ऐसे कुर्तक और नंगई के बीच ये सवाल लाजिम है कि क्या आज भारत पहली बार युद्ध के लिये जा रहा है या हमारे अतीत में भी ऐसे मौके आयें थे जब जान-माल तथा राष्ट्र की अस्मिता के बीच किसी एक का चुनाव करना था? ये प्रश्न तक भी आया था जब सीताहरण के पश्चात् रावण के साथ युद्ध में निरीह वानरों और भालुओं को प्रभु ने युद्ध के मैदान में उतारा था, ये प्रश्न तब भी आया था जब भगवान श्रीकृष्ण महाभारत युद्ध का सूत्र-सञ्चालन कर रहे थे. याद करिये कुरुक्षेत्र का मैदान जब अर्जुन हथियार नीचे रख कर भगवान को युद्ध के नुकसान गिना रहा था. अर्जुन ने भी वही सारे तर्क दिये जो आज दिये जा रहें हैं. जैसे युद्ध हुआ तो जन-धन की क्षति होगी, औरतें विधवा होंगी, बच्चे अनाथ होंगे वगैरह-वगैरह. जब कृष्ण ने उसके सारे तर्कों को काट दिया तो उसने आखिरी तर्क देते हुए कहा कि जब युद्ध होता है तो पुरुष मारे जातें हैं, स्त्रियाँ आश्रयहीन हो जातीं है, जिसके नतीजे में वर्णशंकर संताने पैदा होती हैं जो राष्ट्र के लिये घातक होतीं हैं . अर्जुन ने इतनी बड़ी बात कह दी पर क्या कृष्ण ने उसकी दलील को माना? नहीं माना. मज़े की बात है कि युद्ध की विभीषिका अर्जुन उनको समझा रहा था जो कृष्ण पहले ही संधि प्रस्ताव के समय दुर्योधन को समझा चुके थे. याद नहीं आ रहा हो तो रामधारी सिंह दिनकर को पढ़ लीजिये. श्रीकृष्ण के श्रीमुख से युद्ध की विभीषिका बताते हुए दिनकर कह रहें हैं: -

टकरायेंगे नक्षत्र निखर, बरसेगी भू पर वह्नी प्रखर
फन शेषनाग का डोलेगा, विकराल काल मुंह खोलेगा
दुर्योधन रण ऐसा होगा, फिर कभी नहीं जैसा होगा
सौभाग्य मनुज के फूटेंगे, वायस शृगाल सुख लूटेंगे

अर्जुन से लेकर भीम और घटोत्कच तक ने उस युद्ध में अपने बच्चे खोये थे, द्रौपदी और सुभद्रा की कोख उजड़ी थी, कृष्ण को उस युद्ध संचालन के नतीजे में अपने कुल के नाश का श्राप भुगतना पड़ा था पर युद्ध से उन्होंने मुंह नहीं मोड़ा. प्रश्न है युद्ध के बाद की इन विभीषिकाओं को जानते हुए भी और अर्जुन के तर्कों के बाबजूद कृष्ण ने युद्ध न करने की नीति अपनाई क्या ? नहीं अपनाई, युद्ध शांति की अनिवार्य शर्त है , धर्मक्षेत्र का शाश्वत संदेश भारत के लिये यही था.

"सैनिक का गौरव युद्ध भूमि में बलिदान होने में हैं" , शरीर छोड़ने के पश्चात् उनकी आत्मा को भी इसका संतोष रहता है कि शत्रुओं से जूझते हुए बलिदान हुए. भारत की माताओं ने अपने सपूत यूं जलील मौत मरने के लिये नहीं जने हैं. पांच करोड़ बांगलादेशी देश की अर्थव्यवस्था यूं ही खोखला रहें हैं, इन जलीलों को खदेड़ दीजिये युद्ध का खर्च उसी से निकल जायेगा.

नीलम जैन

श्री महावीर ग्रुप ऑफ इण्डस्ट्रीज

संस्थापक एवं निदेशक
स्व.दयाचन्द जैन (फ्रीडम फाईटर)
मो. 98141 75293

IN THE SERVICE OF NATION 1970 ESTD.

मैनेजिंग डायरेक्टर
राजेन्द्रकुमार जैन
मो. 98140 92613

जगराओ (पंजाब)	श्री गंगानगर (राजस्थान)	जम्मू (कश्मीर)	कोलकाता (बंगाल)
223191, 223103	2494412	2547876	98304 86979
222 093, 228962	2494413	2547239	99973 4272

Ahimsa walk – Tamilnadu

Dr. Kanaka Ajitdoss

A unique, voluntary movement in defence of Jaina Heritages- first time in India

For discovering, protecting, preserving , safe guarding the abandoned Jaina heritage sites, monuments, hills, dilapidated ancient temples, Thirthankara images, palm-leaf manuscripts from vandalism, destruction, quarrying , conversion and theft; founded by Thiru. A. Sridharan of Puduchery (Pondichery) - Ahimsa walk is now a registered body under Tamilnadu registration of societies Act-19 headed by Prof. Dr. Kanaka Ajithadoss jain guided by dedicated members;

'Ahimsa walk' is a commoners movement of self-motivated individuals with a noble aim of creating awareness among people about the necessity of protecting a considerable number of abandoned Thirthankar images, a number of forgotten and unprotected jaina hills throughout Tamilnadu ; these ancient Jaina hills containing stone beds for jaina ascetics , inscriptions, sculptures, and pits for grinding medicines are at present subjected to quarrying, vandalism, abuse, immoral activities,. These ancient jaina sites, hills are not known to the people by and large and it is pitiable that these invaluable treasures are not yet come to the notice of the Archaeological Survey of India and State Archaeology department which have been established only for safeguarding the heritage treasures; day by day destruction of jaina heritage sites, monuments continues unabated ;

The plan is very simple; the objectives are noble and praiseworthy

"Ahimsa Walk" has been a monthly event of heritage lovers ,conscious of protecting the nation's heritage treasures; the first Sunday of every month Ahimsa walkers from different places-villages, towns, cities, travel to a designated place ,mostly a village , that is nearer to the heritage site; they go around the village streets inviting the people and students, teachers to join Ahimsa walk; hand bills containing information about Ahimsa walk, historical aspects of the heritage site, need for protecting the heritage site etc., are distributed to all householders of the village; a procession-Ahimsa walk is conducted from the village to the heritage site with slogans, catchphrases which emphasise the importance of protecting heritage sites, monuments, hills, abandoned ancient sculptures from destruction, vandalism and theft; along with such slogans the importance of Ahimsa for a peaceful living is also voiced; with a simple breakfast, participants (including the local people) visit the spot where experts explain various features of the site (history ,antiquity, inscription, stone beds, images, jaina ascetics who used the place for penance, preaching Ahimsa dharma, imparting education to the mass, giving medical aid to the afflicted, etc.;) after that few of the participants speak on very useful subjects including importance of Ahimsa , restraint of senses, community service etc.; the participants discuss about measures to be taken for protecting the heritage site or the abandoned Thirthankara image; (if a sign board near the heritage site and on high way or a protective shelter for the abandoned Thirthankara image is needed then a request is made for sponsorship) ; a summary of previous 'Ahimsa walk' is read and the place of next Ahimsa walk is decided and announced . importantly writing materials, books ,note books are distributed to all students of the village; after a simple lunch start the reverse journey ,awaiting the day of next Ahimsa walk; (request are made for sponsoring free breakfast and lunch).

Objectives of Ahimsa walk

(1) To protect the abandoned sculptures throughout Tamil Nadu Viz., Digamabar Jain Idols, bas-reliefs, stone beds for jaina ascetics,, dilapidated jain temples, vestiges, paintings, inscriptions in the hills and hillocks, isolated rocks, boulders,

(2)To involve in the temple service in the rural areas (keeping the temple premises clean, removing destructive plants growing on temple towers and other areas, cleaning the idols)and to preserve palm-leaf, paper manuscripts and their digitization ; to make awareness among the people concerned about the security related issues in temples

(3) To follow the guidelines of ASI to protect the sculptures and inscriptions

(4) To invite the local people from areas surrounding the jaina heritage sites and monuments for participation in Ahimsa walk. To create awareness among local people by explaining the historical aspects, religious importance and heritage value of the monuments; to make them understand that the heritage site/ monument of that area is their priceless treasure.

(5) To enlighten the importance Ahimsa Dharma to the local people (almost all abandoned Jaina heritage sites are without any jain family or jain individual)

(6) To explain the local people ways and means of protecting the heritage structures from destruction,

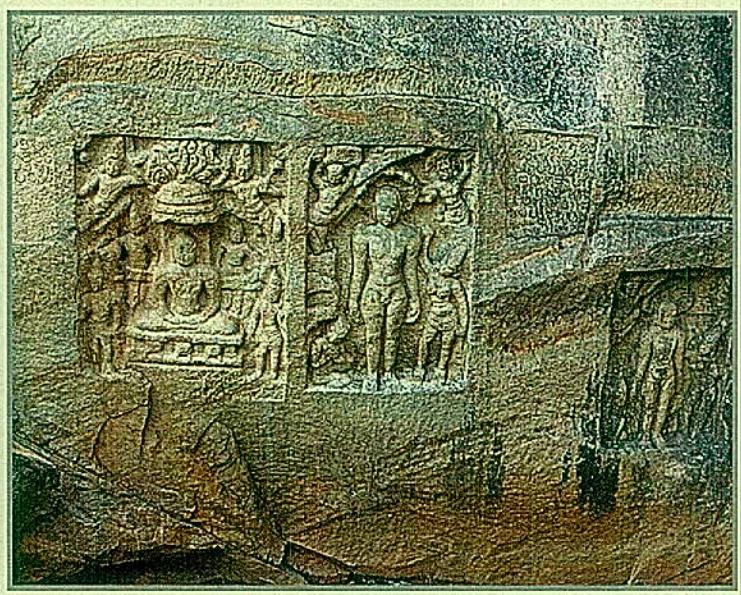

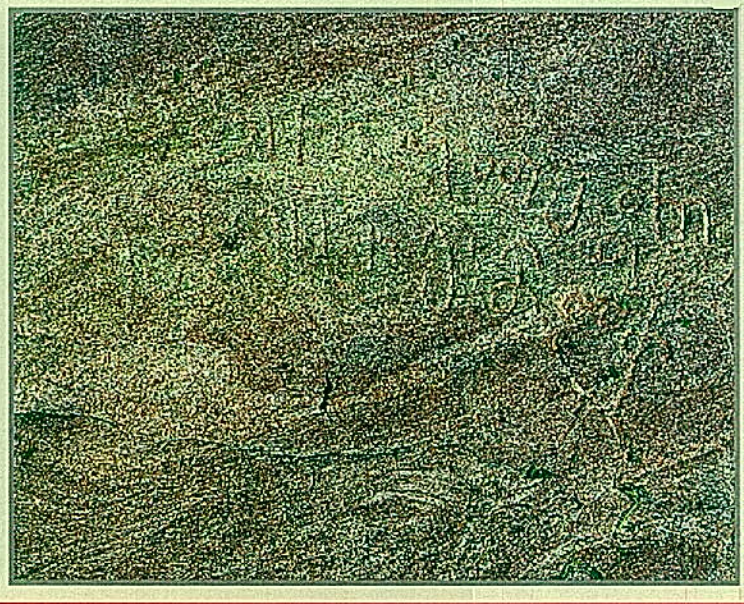

vandalism and abuse and quarrying

(7) To take appropriate steps to bring to the notice of the ASI or/and State archaeology dept. to include the heritage sites hitherto not included in the notified list of protected monuments/ heritage sites.

(8) To organize programmes for motivating, educating people to involve in the protection and maintenance of heritage sites, to take care of abandoned images

(9) To arrange attractive programmes including photo exhibition, power point presentation , small documentaries for children and youngsters to explain 'what is Ahimsa walk?' ' what are jaina heritage sites ?, monuments ?, 'the contributions of jains for Tamil language, literature, grammar and culture' ; to suggest and encourage children to plan for heritage tourism to important jaina heritage sites and monuments with their parents; to help them to [illegible]n tours to jaina heritage sites

(10) To send details of Ahimsa walk to all the jaina villages , one month in advance, by way of hand bills, posters, by face book- wahtsApp messages, flex board displays , by announcements during festival time etc.

(11) To arrange transport facilities for ahimsa walkers (cost by equal share basis) from common centres; (the cost subsidised for those who are economically vulnerable)

(12) To provide food free of cost to the participants and the locals, to print and distribute hand bills, booklets explaining the importance , antiquity, of the heritage site/ monument being visited, and to arrange for lectures at the heritage site by experts; to explain the philosophy of non- violence (Ahimsa) by organizing meetings, seminars, classes, exhibition, books etc. by arranging educational tours , by photo exhibition, power-point presentation, (electronic media)

(11) To serve Digamber Munis, & Muni Sangam.

(12) To run free Medical Aid Centre to the needy irrespective of caste, creed and religion.

The first Ahimsa Walk was on 5-1-2014 and the latest on 1st,2nd Oct-2016 (so far 34Ahimsa walks)

The first Ahimsa walk was inaugurated on 5-1-2014.Sunday at a village called Vuranithangal by Sri Lakshmisena Bhattarak, the Head of Jinakanchi Digamber Jain Mutt,MelSiththamur, Tamilnadu. He is the guide, and religious head of all digamber jains living in Tamilnadu. He is the sole custodian of all digamber Jain temples in Tamilnadu. Symbolically He is also the sole protector of all jaina sites found in Tamilnadu. The first Ahimsa walk was greatly encouraged by sizeable participation from the community as well as the local people of other faiths.

The event started with recitation of Pancha Namaskara Maha Mantra The youngest participant for the walk was 5 years old and oldest were in the range of 85- 90 years ; the 'Ahimsa walkers" wear a special ,white T-Shirt with a print "Ahimsa walk"

Heritage sites, monuments, hills, abandoned Thirthankara sculptures, visited and actions taken to safeguard so far :

Vurani thaangal (5-1-2014 the First Ahimsa walk) (Hill with a larger cave , stone Beds,inscription)

Neganurpatti (Hillock- cave with beds and Tamil-Brahmi inscription)

Vazhuthalamkunam (cave, Bas relif of Thirthankara Image, beds, Inscriptions)

Kanjiyur (cave, Stone Asceic beds of different type (from beds of Jaina hills of Southern Tamilnadu)

Onampakkam (Three Thirthankara Images- 8th century Tamil-Grantha script of Pallava period-ascetic beds, caves

Vilanagar- cave with beds

Konaipudur- cave with beds- even a trained trekker will find it to climb the hill)

Thiyaga durgam- cave-Mahavira imagem Ambiga Yakshi-worshipped by Hindus

Valli malai (Palli malai) – very big hill with Extra-ordinary Jaina sculptures never to be seen any where- cave under Hindu occupation-Inscriptions Kannada, Tamil-of Rajamalla

Seeyamangalam, cave, inscription of tamil, Grantha, Sanskrit, panel of Thirthankara images

Vedal- ancient universiry for women ascetics, inscription of Chola period

Marakkunnam-beautiful dilapidated temple , hill with beds

Aatchipakkam- a small hillock with Parswa Thirthankara image depicting Kamata episode

Ananthmangalam- A pnel of Thirthankara images, Ambiga Yakshi, Inscription ,cave beds

Thirunatharkundru- A panel of 24 Thirthankaras in two rows (unique- nowhere in India),Inscriptions on barrn rock about sallekhna by jaina ascetics, cave

Thirunarunkundram- very famous Hill Thirtha- bas relif of Parswa known as Appandalnatha, several inscriptions, cave, beds,

Ennayiram- Hill with Parswa Thirthankara image, large number of stone beds, caves,

Kazhugumalai- an unique unparalleled jaina heritage site- 100 inscription s in one place, hundreds of Thirthankara images, images of Ambika Yakshi and padmavathi Yakshi of heavenly beuty, Parswa Thirthankara with Kamata episode - A masterpiece of art in stone

Kollimalai- hill with number of abandoned Thirthankara images, dilapidated temples

Thirumalai- sacred hill with 16 feet Nemi thirthankar image,

several inscriptions, cave, Temple built by Cholas
Kontha Konthala (Andhra Pradesh)-sacred place of Acharya Kuntha Kuntha (Ahimsa walk mobilised about 1000 jinas to assemble at the holy place to chalk out plans to save the sacred place
'Valaththi, a small cave with Parswa Image
Paraiyanpattu, sallekhana inscription in vatteluththu
Avalurpet, abandoned Thirthankara image
Sindhipattu, abandoned Thirthankara image
Seeyampoondi abandoned Thirthankara image
Santhapettai,Thotti, Vazhvidam thangal, Nedumudaiyan, Koovanur - hillocks, caves - not listed by Archaeology dept.-
Pudukkottai District (Annavasal, Siththannavasal, Aluritty malai, Bommadi malai Kudagumalai, Mayilapatti, Thekkattur, Kayampatti, Kannagkudi,Kizhnanjur, Koilvirakudi, Mosakudi, Malaiyadipatti, Mangadevanpatti) Hills, caves, Tamil brami inscriptions, abandoned Thirthankara images,
Dhalavnur- cave- Ascetic beds
Velappadi- very large foot-prints-inscription
Kukkalapalli- Hill –cave-beds
Onampakkam- Three Tirthankara Images- 8th century Tamil-Grantha script of Pallava period-ascetic beds, caves - 2nd time Ahimsa walk as the hill is threatened by granite quarrying nearby
Vilappakkam- Thiruppan malai-Ancient jaina hill- Thirthankara images, inscriptions, ascetic beds, Ambika Yakshi- now Muslims use as burial place- (ASI control!!!????)
Acharya Kuntha Kuntha hill, -Sacred foot prints of Acharya Kuntha Kuntha-small cave-
Thirakoil - cave-inscriptions, thirthakar images
Nagalapuram, abandoned Parswa image
Punniyam - abandoned Parswa image
Mudippalli hill - Hill with beds, seated Parswa Thirthankara
Pugalur- sacred jaina hill – Tamil brami inscriptions of Chera kings
Chennakal pudur- abandone jaina cave with beds with swathika symbol-
Sukkaliyur- jaina cave with beds caved -in due to quarrying
Puliur-Mahavira image worshiped but locals with ash marks on the body
Jambai –an ancient hill with tamil brahmi inscription –cave with beds
Veerapandi- abandoned Thirthankara image protected with a Mantap by Ahimsa walk
Maramgiyur - abandoned Thirthankara image protect with a Mantap by Ahimsa walk
Veeramadai- abandoned Thirthankara image protected with a Mantap by Ahimsa walk
Ravuththanallur- abandoned Thirthankara image Mantap construction started by Ahimsa walk
Villiyampakkam- abandoned Thirthankara image Mantap construction started by Ahimsa walk
Iralachery- abandoned Thirthankara image protected with a small temple with an initiative by Ahimsa walk
Thondi-Ramnad district- Abandoned Jaina heritage site with Parswa image
Thrumalai-Sivaganga district- ancient jaina hill with Tamil-brami inscriptions
Kunnakudi- An ancient jaina hill- caves with Tamil-Brami inscriptions- (34th Ahims walk 1st and 2nd-october-2016)

ऋषभदेव केषरियाजी में

आचार्य विमलसागरजी की अभिवन्दना में हुए अनेक आयोजन

भारतीय श्रमण परम्परा के पोषक थे आचार्य विमलसागरजी

- उपाध्याय ऊर्जयन्त सागरजी

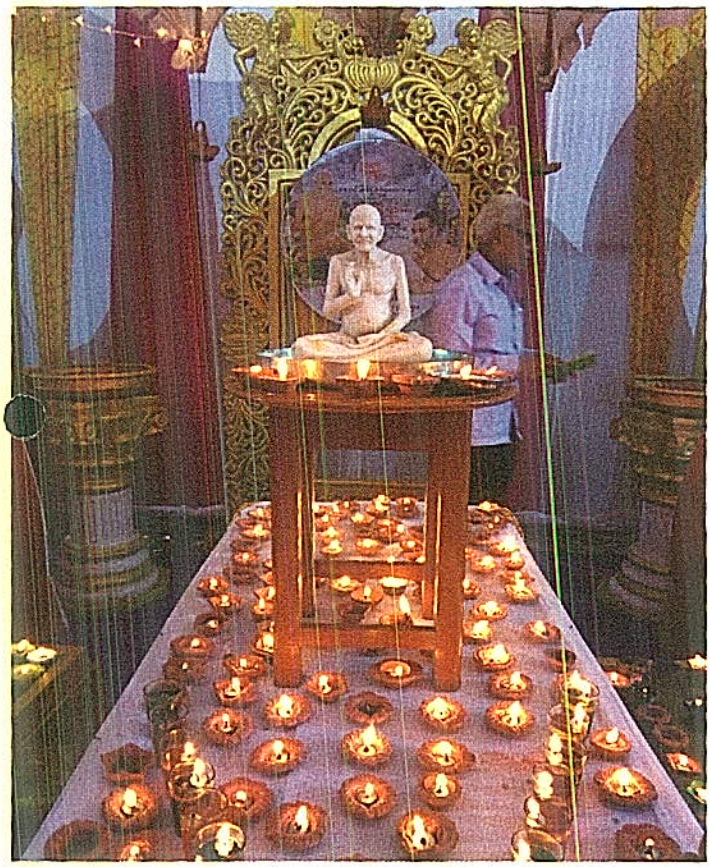

ऋषभदेव केशरियाजी। प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव की अतिशय भूमि केशरियाजी राजस्थान में चातुर्मासरत वात्सल्य रत्नाकर आचार्यश्री विमलसागरजी महाराज के अंतिम दीक्षित शिष्य उपाध्यायरत्न श्री ऊर्जयन्तसागरजी महाराज का प्रभावनापूर्ण चातुर्मास अनेक धार्मिक सामाजिक आयोजनों के साथ भट्टारक यशकीर्ति दिगम्बर जैन धर्मार्थ ट्रस्ट गुरूकुल, ऋषभदेव जिला उदयपुर में सम्पन्न हो रहा है। उपाध्यायश्री की प्रेरणा से सम्पूर्ण भारतवर्ष में आचार्यश्री विमलसागरजी महाराज का जन्म शताब्दी वर्ष अत्यन्त उत्साह के साथ विगत एक वर्ष से जारी है। अभिवन्दना महोत्सव के रूप में मनाए जा रहे जन्म शताब्दी वर्ष के तहत आचार्यश्री की विनय में चार दिवसीय आयोजन सम्पन्न हुआ। जिसमें सकल दिगम्बर जैन समाज केशरियाजी के साथ सम्पूर्ण देशभर के गुरूभक्तों ने अपनी सहभागिता की।

१०८ दीपकों से हुई आचार्यश्री की आरती

२२ सितम्बर को घटयात्रा, शोभायात्रा, महामृत्युजंय विधान का शुभारंभ हुआ, सायंकाल आचार्यश्री की मंगल आरती अत्यन्त उत्साह के साथ सम्पन्न हुई, रात्रि में दिगम्बर जैन महिला मण्डल ऋषभदेव द्वारा आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति की गई। सम्पूर्ण क्रियाएँ विधानाचार्य पं. सुरेन्द्र जैन सलुम्बर ने सम्पन्न कराई।

आचार्यश्री के अवदान पर हुआ गुणानुवाद

२५ सितम्बर को आचार्यश्री के विग्रह का पंचामृत अभिषेक व पूजन के उपरांत दोपहर में वात्सल्य रत्नाकर गुणानुवाद सभा का आयोजन हुआ। जिसमें उपाध्यायश्री ऊर्जयंतसागरजी महाराज के पावन सान्निध्य में लालबहादुर संस्कृत विद्यापीठ के प्रो. वीरसागरजी जैन नई दिल्ली, पत्रकार व वक्ता राजेन्द्र जैन 'महावीर' सनावद, प्रतिष्ठाचार्य पं. सुधीर मार्तण्ड, पं. सुरेष जैन मारौरा, पं. छोटेलाल जैन झाँसी, पं. कमल बाकलीवाल ग्वालियर, कवि बलवंत बल्लू ने आचार्यश्री के विराट व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर आ. विमलसागरजी के परमभक्त, समाजश्रेष्ठी श्री आर.के.जैन मुम्बई, खैरवाड़ा विधायक श्री नानालाल अहारी, सलुम्बर विधायक श्री अमृतलाल मीणा, वरिष्ठ अधिवक्ता श्री सुधांषु कासलीवाल जयपुर, डी.एस.पी. सौभाग्यसिंह उपस्थित थे।

उपाध्यायश्री ने कहा कि आचार्य विमलसागरजी के व्यक्तित्व-कृतित्व व गुणानुवाद में अनेक वर्ष लग सकते हैं, वे भारतीय श्रमण संस्कृति के पोषक थे, जिन्होंने श्रमण परम्परा के उन्नयन में बहुत बड़ा योगदान दिया है, आज भी उनके शिष्य भारतीय श्रमण संस्कृति के प्राण है। संचालन करते हुए पं. सुरेन्द्र जैन सलुम्बर ने आचार्यश्री का विस्तृत परिचय दिया।

तीन संस्थाओं को मिले ५१ हजार के पुरस्कार

ए.वी.एस. फाउण्डेशन केशरिया द्वारा दिगम्बर जैन महिलाश्रम दरियागंज, नई दिल्ली, श्री शांति वीर दिगम्बर जैन गुरूकुल अतिशय श्रेत्र महावीरजी, श्री अपभ्रंश साहित्य अकादमी अतिशय क्षेत्र महावीरजी, जयपुर प्रत्येक संस्था को ५१ हजार रूपये का पुरस्कार प्रदान किया। श्रावकश्रेष्ठी श्रीयुत कैलाशचंद जैन गोधा श्योपुर को सम्मानित किया। अध्यक्ष श्री रमणलाल भाणावत ने कहा कि गुरूकुल परिसर में अभिवंदना महोत्सव की स्मृति में स्थायी पट्ट लगाया जाएगा। आचार्यश्री की स्मृति में पॉकेट डायरी व अनकी डायरी के आध्यात्मिक तथ्यों से प्रकाशित 'स्वात्म सम्बोधन' के दूसरे भाग का विमोचन भी किया गया। उल्लेखनीय है कि अभिवंदना महोत्सव का शुभारंभ विगत वर्ष २ अक्टूबर २०१५ को राजस्थान के राज्यपाल श्री कल्याणसिंह ने जयपुर में की थी, तभी से सम्पूर्ण देश में उक्त आयोजन निरंतर जारी है।

- अनुपमा-राजेन्द्र जैन
२१७, सोलंकी कालोनी, सनावद
जिला खरगोन (म.प्र.) ४५१११
मो.नं.:- ९४०७४९२५७७, ९८२६२९९५६८
email – rjainmahaveer@gmail.com

उल्लेखनीय सेवाओं के लिए न्यायमूर्ति व आइएएस का सम्मान

भोपाल। संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज का प्रभावनापूर्ण चातुर्मास म.प्र. की राजधानी भोपाल में संपन्न हो रहा है। इस अवसर पर देश-विदेश के श्रद्धालु राजनेता, न्यायिक प्रमुख, प्रशासनिक प्रमुख आचार्यश्री के दर्शनार्थ पधार रहे है। दशलक्षण पर्व के दौरान देश के प्रख्यात न्यायविद न्यायमूर्ति श्री एन. के.जैन, न्यायमूर्ति श्री अभय गोहिल, न्यायमूर्ति श्रीमती विमला जैन, आईएएस श्री सुरेश जैन, जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री डी.के.जैन आचार्यश्री का आशीर्वाद प्राप्त करने पहुंचे। मंदिर निर्माण कमेटी के अध्यक्ष श्री प्रमोद जैन हिमांशु सहित चातुर्मास कमेटी के पदाधिकारियों ने उल्लेखनीय सेवाओं के लिए आचार्यश्री के सान्निध्य में सम्मानित कर उन्हें स्मृति चिन्ह भेंट किए। उल्लेखनीय है कि सेवानिवृत्त आईएएस व नैनागिर सिद्धक्षेत्र के अध्यक्ष श्री सुरेश जैन (भोपाल) ने आचार्यश्री के आशीर्वाद से निर्माणाधीन मंदिर हबीबगंज को आवंटित भूमि के वैधानिक अवलेखीकरण के लिए विशिष्ट सहयोग दिया है। इस हेतु उन्हें आचार्यश्री ने आशीर्वाद प्रदान करते हुए सेवा कार्यों में जुटे रहने का आशीष दिया। श्री सुरेश जैन ने अपने प्रशासनिक कार्यकाल के दौरान अनेक कार्य संपादित किये है जो समाज के लिए मील का पत्थर साबित हुए है। वे आचार्य विद्यासागर प्रबंध संस्थान भोपाल के प्रबंध निदेशक भी है जो आचार्यश्री के आशीर्वाद से संचालित देश के उत्कृष्ट प्रबंध संस्थानों में सम्मिलित है।

संलग्न फोटो: आचार्यश्री के सान्निध्य में श्री सुरेश जैन आईएएस को सम्मानित करते हुए पदाधिकारीगण।

-राजेन्द्र जैन महावीर

सिद्धवरकूट में हुई मुनि संवेग सागरजी की समाधि, उमड़े श्रद्धालु

आचार्य वर्द्धमानसागरजी के सान्निध्य में हुई सल्लेखना समाधि

सिद्धवरकूट (राजेन्द्र जैन महावीर)। दो चक्री दस कामकुमार सहित साढे तीन करोड़ मुनिराजों की निर्वाण स्थली सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूटजी को आज पुनः इतिहास में दर्ज होने का अवसर मिल गया। प्रथमाचार्य श्री शांतिसागरजी महाराज की पट्टा परम्परा के वर्तमान पंचम पट्टामधीश वात्सल्य वारिधि राष्ट्रगौरव आचार्यश्री वर्धमानसागरजी महाराज के निर्यापकत्व में उन्हीं के दीक्षित मुनिश्री संवेगसागरजी महाराज की संल्लेखना पूर्वक समाधि 18 सितम्बर को प्रात: 5.40 बजे हुई। अत्यंत शांत परिणामों से हुई समाधि में संपूर्ण संघ ने मुनि संवेगसागरजी महाराज को जो वात्सल्य प्रदान किया वह अभूतपूर्व व अनुकरणीय है। कोलकाता निवासी श्रावक श्रेष्ठी श्री रिषभ पाटनी ने विगत 3 सितम्बर को सिद्धवरकूट क्षेत्र में मुनि दीक्षा प्राप्त की थी। पर्युषण महापर्व व 17 सितम्बर को क्षमावाणि के उपरांत अपने उपवास में समता भाव धारण करते हुए आचार्य संघ के सान्निध्य में पंच परमेष्ठी का उच्चारण करते हुए अपने प्राण त्याग दिये।

सुरई - दशहरा पर्व की पूर्व संध्या पर प्रेम का संदेश देती आर्यिकारत्न तपोमति माताजी .....

श्रीमती प्रीति पाली को राष्ट्रीय नारी गौरव सम्मान

जबलपुर, अध्यक्ष दिगम्बर जैन महा समिति एवं सुधाकलश की संस्थापक श्रीमती प्रीति पाली को व्यावर (राज.) में मुनि पुंगव श्री 108 सुधासागर जी महाराज के सानिध्य में आयोजित 23वाँ राष्ट्रीय महिला अधिवेशन में म.प्र. से श्रीमती प्रीती पाली जैन लाल बंगला संस्थापक अध्यक्ष दिग.जैन महिला समिति को राष्ट्रीय नारी गौरव सम्मान से अलंकृत किया गया। इसमें देश के विभिन्न राज्यों से हजारों की संख्या में महिलाएँ उपस्थित हुई। जिसमें प्रमुख रुप से श्रीमती सुशीला पाटनी, किशनगढ, राष्ट्रीयमंत्री शालिनी बाकलीवाल, जयपुर, ज्योतीजी टोंग्या मध्याचल अध्यक्ष, इंदु गांधी सचिव आदि की उपस्थिति विशेष उल्लेखनीय रही।

- वीरेश सेठ, जबलपुर

श्री नंदीश्वर पंचालेश्वर अतिशय क्षेत्र

नंदीश्वर द्वीप महान, चारो दिशी सोहै।
बावन जिनमंदिर जान, सुरनर मन मोहे।
पंचालेश्वर क्षेत्र महान है, नंदीश्वर का।
मन वच तन ध्याऊ, आज मेटो भव खटका।।

हम ऐसे एक अतिशय अकृतिम तुल्य ऐतिहासिक तीर्थक्षेत्र का परिचय देने जा रहे है जो दिगम्बर श्री जैन शासन के वर्तमान में प्रसिद्ध अतिशय क्षेत्रों में एकमेव ऐसा अतिशय चमत्कारिक शांत, मन-आकर्षक सुंदर मनोकामना पूरी करनेवाला, मन को लुभानेवाला क्षेत्र है। महाराष्ट्र राज्य के मराठवाडा बीड जिले के अंतर्गत गेवराई से 22 कि.मी. तथा शनि का क्षेत्र राक्षस भवन से 20 कि.मी. तथा दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पैठण से 31 कि.मी., औरंगाबाद से 100 कि.मी. कचनेर दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र से 75 कि.मी, दिगम्बर जैन जटवाडा से 110 कि.मी., वेरुळ से 132 कि.मी., केसापुरी से 60 कि.मी. तेर से 150 कि.मी. तथा दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र कुंथलगिरि से 105 कि.मी. अंतर पर होने से यात्रियों के यात्रा के सुविधा युक्त है। यहाँ का हवा पानी भी अतिशय युक्त है।

इस द्वीप की रचना नैसर्गिकता को सिद्ध करती है। क्योंकि गांव के पश्चिम-उत्तर पूर्व त्रय बाजू तक गोदावरी (महाराष्ट्र गंगा) बहती है। पश्चिम बाजू में प्रवेश करते समय खारी नाम का ओढा (नाला) है। चारों बाजू पानी होने से उसको द्वीप कहते है। यह भौगोलिक व्याख्या सार्थक करता है। यह तीर्थ-नंदीश्वर द्वीप तुल्य जिनशासन की अपेक्षा रखता है।

वर्तमान में यहाँ क्षेत्र पर वास्तुशास्त्र के कथन अपेक्षा सर्वतोभद्र वेदी पर चौमुखी सर्वतोभद्र त्रय मूर्ति वज्रलेपयुक्त, हेमाडपंथी पाषाण की जो कि अत्यंत प्राचीन है। एक तो संगमरवर की नंदीश्वर भी है ऐसे 31 वीतराग मुद्राधारी (कुछ तो खडगासन दिगम्बर भी हैं), मूर्तियों का दर्शन आज भी नूतन त्रय मंदिरों के साथ हमारे पुण्योदय से होता है और भव्यात्माओं को नदी किनारे निसर्गरम्य शांत क्षेत्र में, आत्मकल्याण-शाश्वत आनंद अनंत सुख की अनुभूति प्राप्त कराता है। सर्व बाधा, समस्या दु:ख वेदना पीड़ा चिंताओं को दूर करता है। यहाँ पुराने अवशेषों से मन को यह जरूर लगता है कि जैन भूगोल 8 वे नंदीश्वर द्वीप क्षेत्र के सम 52 मंदिर तथा (52X108) 5616 मूर्तियाँ युक्त रचना होनी चाहिये। जो एक अनवेशन पूर्ण संशोधन का विषय है।

गांव के पुराने मंदिर के इतिहासों में पंचालेश्वर में दिगम्बर जैन मंदिर था ऐसा स्पष्ट उल्लेख है। जो योग्य समय में सभी के सामने आयेगा। ऐसे पवित्र विषय को हम साहित्यकार, ग्रंथ अध्याता लेखकों पर ही छोड़ते हैं, जो हमें समय-समय पर ज्ञात कराते रहेंगे। कुछ हम इस में ही आगे लिखने का प्रयत्न कर रहे हैं। श्री ग्रंथराज, आदिनाथ पुराण में आदि प्रभु के देशना के गांवों के नाम दिये है उसमें पांचाळ नाम आया है। जैसे

काशी आवन्ति कुरु कौशल सुदम पुड्रान।।
चेघडगबंग मगध कलिंग भद्रान।।
पांचाल मालव दशार्णदिर्भ-
देशाना सन्मार्ग देशनपरो विजहार धीर:।।

यहां बीड जिले में तेर दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र में वीरप्रभु का

समवशरण आया था ऐसी मान्यता है तो विहार में ऐसे तीर्थंकर पास के इस पंचालेश्वर क्षेत्र में आये ही होंगे।

पुराण-ग्रंथों में 32 मुकुट बद्ध राज्य-राजाओं के नामों में पंचाळ नाम हरिवंशपुराण, शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरहनाथ तथा अहिंसा प्रेमी भगवान नेमीनाथ के कथानकों में आता है। यही कारण है कि सती द्रोपदी को पांचाली तथा उनके भाई-पिता को भी पांचाळ नाम से संबोधा है। उनके किसी मांडलिक राजा, विद्याधर राजा का संबंध इस क्षेत्र ग्राम से आया ही होगा। इसलिए उसका नाम पंचालेश्वर इतिहास परंपरा में प्रचलित हुआ होगा।

इस दृष्टी से एक पुराने क्षेत्र के पूजन की-जयमाला में वर्णन आता है

पुरातन है यह अतिशय क्षेत्र
एक समय उसी पंचालेश्वर में,
पंचाल नरेश राज्य करता था।
नित धर्म ध्यान में लीन रहता था।
निकट ग्राम राक्षसभुवन में।।
राक्षसगण बडी संख्या में रहते थे।
वह नित पंचालेश्वर नगर में आकर के
हिंसा और भारी उपद्रव करते थे
इस कारण चिंतित हुए पंचाल नरेश,
किया ध्यान प्रभु का, भय मेटो शिव जिनेश
देवों ने आके दिया पंचालेश्वर का साथ
युद्ध में भाग गये राक्षसगण रातों रात
धर्मयुद्ध में जय प्राप्त कर राजाने
नंदीश्वर का सुंदर मंदिर बनवाया था।।

ऐसे पुराण प्रमाण से तथा यहाँ के वातावरण से यह सहज लगता है कि जैन संस्कृति का तीर्थ वैभव है यह, जो की यहाँ के संस्कृति धरोहर की रक्षा की प्रेरणा देता है।

इस क्षेत्र में प्रथम पंचम पट्टाचार्य श्रेयांस सागर (अपने) मुनि पर्याय के संघ के साथ आ. महावीरकीर्ति जी, आ.विमलसागर जी, आ. सुबलसागर जी, विशाल संघ के साथ आये थे।

जीर्णोद्धार योजना:- करीब 1985 में तीर्थरक्षा शिरोमणी प.पू. आचार्य मुनिवर्य आर्यनंदी, उपाध्याय श्री जयभद्र मुनिद्वयों के सान्निध्य में एक जीर्णोद्धार योजना के अंतर्गत एक छत्री, दस कमरे ऑफीस, मैनेजर निवास, मुनि निवास, गेट आदि बनाये गये फिर 2000 मार्च में क्षेत्र यात्रा में पू. क्षुल्लकरत्न सुभद्रसागर जी के निर्देश से वज्रलेप के बाद लघु पंचाकल्याणक होकर क्षेत्र प्रगति के ओर अग्रसर है। पूज्य क्षुल्लकजी के आशीर्वाद, मार्गदर्शन में अनेकों बार सिद्धचक्र मंडल पूजन भी हुए हैं। प.पू. श्री मुनिराज 108 चिंदानंदजी का भी चातुर्मास 1995 में हो चुका है। उसके बाद आ. बाहुबली सागर महाराज श्री विशाल संघ के सम्मेद शिखरजी यात्रा संबंध के साथ क्षेत्र में आकर नूतन खडगासन मूर्ति विराजमान की तो क्षेत्र की प्रगति जोरों से है। फिर आ.गुप्तिनंदी यात्रा के समय क्षेत्र में आकर पदमप्रभु की मूर्ति क्षेत्र के लिए अच्छी यशपूर्ण रहेगी ऐसे वह कह गये थे। फिर आ. सूर्यसागर ससंघ आकर लालवर्ण की विशाल खडगासन श्री पदमप्रभु भगवान की कासलीवाल परीवार द्वारा विराजमान करके गये। फिर मुनिराज अमित सागर महाराज जी ने गंगवाल परिवार द्वारा श्री मुनिसुव्रत भगवान की श्यामवर्णीय खडगासन मूर्ति क्षेत्र में आने के कारण भूमि पूजा कर गये थे। फिर वर्तमान आचार्य वर्धमान सागरजी ससंघ 2006 के श्रवणबेळगोळा महामस्तकाभिषेक समय जाते हुये मुनिसुव्रत भगवान की मूर्ति स्थापित करके गये। फिर 2006 में मुनिराज मयंकसागर तथा अजेय सागरजी मुनिद्वय का चातुर्मास संपन्न हुआ।

अनेकों ने आँखों देखे चमत्कार -2006 के इस द्वय मुनीश्वरों के चातुर्मास में भयंकर, गंभीर बाढ आयी थी। उस समय पंचालेश्वर ग्राम के साथ नदी के किनारे में संपूर्ण चराचर सृष्टी चलायमान हुई थी। इतना ही नहीं मुनियुगल को भी पास के ग्राम तळणेवाडी में तीन सप्ताह रहना पड़ा था। उस समय बडे द्वय पदमप्रभु-मुनिसुव्रत भगवान की मूर्तियों के घुटने तक बहता ऊँचे पानी में पूर्ण क्षेत्र था। बाढ उतर जाने के बाद जब पू. मुनिद्वय ससंघ अनेक जैन अजैनी के साथ लौट आये तो देखा की क्षेत्र की बहुसंख्य वस्तुयें बह गयी थी। अस्त व्यस्त हुई थी परंतु दोनों बड़ी मूर्तियाँ तथा पार्श्वनाथ मंदिर की नंदीश्वरादि पुरानी 15/20 छोटी-छोटी मुर्तियाँ तथा करीब 8/10 यत्रंजी, अष्टप्रातिहार्य-छत्रजी जैसे के वैसे थे। उनके आसन भी जैसे के वैसे अचल थे, उसमें कुछ भी हलचल गडबडी नहीं हुई थी। ये देखकर युगल मुनीश्वरों ने तथा अनेक उपस्थित लोगों ने आश्चर्य व्यक्त किया था, तथा क्षेत्र की अचल देवताओं का जैन शासन का अनेक चमत्कारों के साथ यह भी एक स्वानुभूतिपूर्ण चमत्कार हुआ।

वैसे उस चातुर्मास के बाद 52 नंदीश्वरादि मूर्तियाँ आने से प.पू.श्री 108 मुनिराज मयंक सागर, प.पू.अजेय सागर तथा क्षुल्लक रत्नसुभद्र सागर आदि की उपस्थिति, मार्गदर्शन आशिर्वाद से फरवरी 2007 में पंचकल्याणक का नियोजन किया गया था। उसमे विशेष तैयारी नहीं होने पर भी छोटी जगह में विशाल रूप लेते हुये अनेक चमत्कार पूर्ण कार्यों के साथ कार्यक्रम पूर्णता को प्राप्त हुआ। यह देखकर स्वयं प्रतिष्ठाचार्यजी ने भी क्षेत्र की प्रगति अच्छी होगी ऐसा कहा था।

उसके बाद विशाल संघ के साथ पू. आचार्य विरागसागर जी, सुंदरसागर जी, सन्मतिसागर जी आदि अनेक मुनिसंघ तथा पू. आर्यिका-स्व.आ. विजयमति माताजी संघ तथा बाद में धर्ममति-ज्ञानमति, कुशाग्रमति आदि का भी आवागमन हुआ। अनेकों ने इसे श्रेष्ठ, शांत, व्रत, तप, धर्मध्यान स्वाध्यायादि योग्य क्षेत्र कहा है। जीर्णोद्धार योजनाओं को यश पूर्ण वृद्धीगत करने की प्रेरणा तथा आशीर्वाद देते रहे हैं।

भाऊसाहेब वाकलीवाल

श्री 1008 चिंतामणी पार्श्वनाथ दिगंबर जैन (प्राचिन) अतिशय क्षेत्र कोठाळा

जि. जालना (महाराष्ट्र)

कोठाळा यह ग्राम जालना जिल्हा अंतर्गत घनसावंगी तहसीलमें द्रोणागिरी नदी के किनारे एक अत्यंत रमणीय, निसर्ग सौंदर्य से सजा हुआ एक प्राचीन एवं वैभवशाली गांव है।

श्री 1008 चिंतामणी पार्श्वनाथ भगवान का प्रथम स्थान कोठाळा ग्राम से 1 कि.मी. दुरी पर नागझरी यहाँ था। इस स्थान में भगवान पार्श्वनाथ की अतिशय [illegible]र एवं रमणीय वालुकामय प्रतिमाजी विराजमान थी। आष्टी (ग्राम) यहाँ के जैन राजा श्री श्रीपाल इन्हे ऐसा स्वप्न आया कि हुआ की, श्री 1008 चिंतामणी पार्श्वनाथ भगवान की यह वालुकामय प्रतिमा नागझरी से आष्टी लाकर उसकी पंचकल्याण प्रतिष्ठा महोत्सव मनाकर विराजमान की जाय। परंतु उपरोक्त कार्य के लिए एक समस्या यह थी कि, प्रतिमाजी के विहार के लिए चिपाड (ज्वार का सुका पेड) की गाडी तैयार कर के [illegible] दिन उम्र वाले दो बछडे की गाडी बनाकर उसी गाडी से प्रतिमाजी को आष्टी तक लाना होगा और मार्ग में एकबार भी पिछे मुडकर नही देखना है।

इसी प्रकार राजा ने तैयारी करके गाडी बनवाकर उसमें प्रतिमाजी विराजमान करते हुए यात्रा प्रारंभ की। किया। परंतु मूल स्थान से थोड़ी दुरीपर आनेपर श्रीपाल राका के मन में एक शंका निर्माण हुई कि, गाडी इतनी हलकी और प्रतिमाजी तो वजनदार है, तो प्रतिमाजी पिछे गिर तो नही गई। उसने पीछे मुडकर देखा और तत्क्षण गाडी तथा बछडे अदृश्य हो गये और प्रतिमाजी उस स्थानपर स्थानापन्न हो गई। बहुत प्रयास करने पर भी प्रतिमाजी तिलमात्र भी वहा से नही हिली। अंत में बहुत से प्रयास करने पर राजा ने उसी स्थानपर प्रतिमा की यथोचित स्थापना कर दी। सुंदर एवं कलात्मक हेमाडपंथी मंदिर बनवाया, जो आजतक प्रसिद्ध है।

यह अतिशयकारी घटना सुनते ही, आसपास के सभी जैन धर्मियों में यह बात हवा की तरह फैल गई और भगवान जी के दर्शन के लिए भक्तों की भीड़ लगने लगी। दर्शनार्थियों की मनोकामना पूर्ण होकर इच्छित फल प्राप्त होने लगी। भक्ति एवं पूजन से प्रतिमा का अतिशय बढने लगा और अनेक चमत्कारों का अनुभव भक्तजनों को हुआ। इसका एक उदाहरण ऐसा है- अगर प्रतिमाजी के अभिषेक के लिए अगर पानी मिश्रित दूध दिया तो गाय दूध देना बंद करती है या उस गाय के स्तनों से रक्त आने लगता है। इसी कारण आज भी अभिषेक के लिए दूध सिर्फ प्रात:काल में ही मिलता है।

कोठाळा में जैन धर्मियों का एक भी घर नहीं है। कुछ अंतर पर कुंभार पिंपलगांव में बहुत से जैन भाई रहते हैं यही लोग क्षेत्र के सभी कार्य एवं व्यवस्था के लिए सदैव कार्यरत हैं।

बहुत पहले से इस क्षेत्र की वार्षिक यात्रा कार्तिक शु. पूर्णिमा को तीन दिन के लिए मनायी जाती थी, परन्तु अतिशय क्षेत्र कचनेर में भी यात्रा इसी तिथी को रहने से श्रावकों की संख्या दोनों क्षेत्रों में बट गई। इस परिस्थिति को बदलने के लिए प. पू. आचार्य श्री आर्यनंदीजी गुरुदेवने इस तिथी को बदलकर मार्गशीर्ष वद चतुर्दशी यह दिन यात्रा के लिए सुनिश्चित किया, तब से आज तक वार्षिक यात्रा अच्छी भरने लगी।

क्षेत्र को मंदिर के पास 45X45 की जगह है। आचार्य आर्यनंदी धर्मशाला नूतन निर्माण करने के लिए खर्च लगभग 15 लाख अपेक्षित है। इस कार्य में आज तक सभी बंधुओं के सहयोग से 6 लाख रुपये खर्च करके धर्मशाला निर्माण करने का कार्य प्रारंभ कर दिया गया है।

प्राचीन मंदिर, जीर्णोद्धार हेतु करीब 1.50 करोड का खर्च अनुमानित है। यहां पर भव्य व सुसज्जित धर्मशाला निर्मित कराकर मंदिर परिसर का सुशोभिकरण करना है। सभी श्रावक श्राविकाओं से नम्र निवेदन है कि अपनी चंचल लक्ष्मी का सदुपयोग करने हेतु एक बार कोठाळा की यात्रा अवश्य करें।

श्री अतिशय क्षेत्र कोठाला का अवलोकन करते हुए महाराष्ट्र अंचल के अध्यक्ष, श्री प्रमोदकुमार कासलीवाल, महामंत्री श्री देवेन्द्रकुमार काला, कोषाध्यक्ष, श्री मनोजकुमार साहूजी, क्षेत्रमंत्री श्री बजरंग व्यवहारे, श्री माणिक कासलीवाल, श्री प्रमचंद साहूजी, श्री लक्ष्मीकांत व्यवहारे, श्री संजय देशमाने (पुजारी)

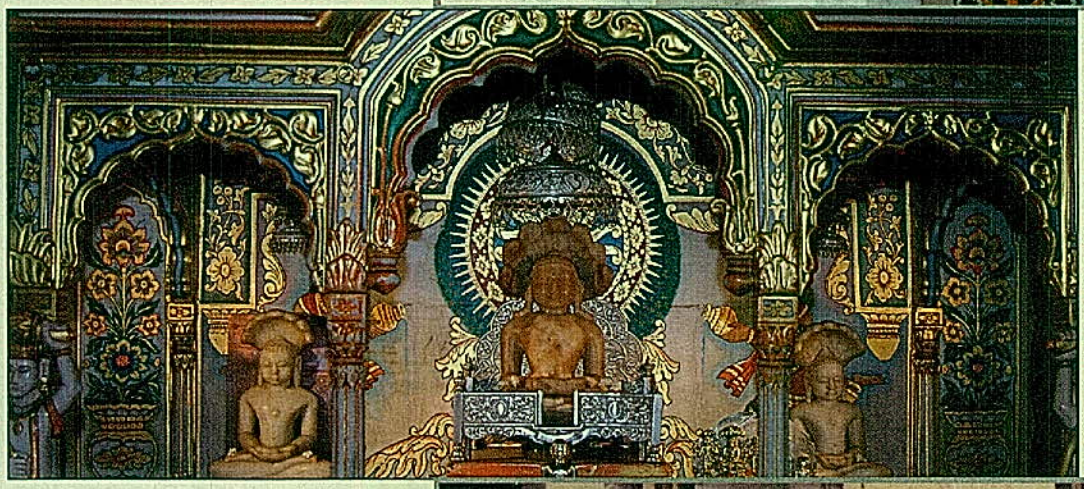

औरंगाबाद से 35 कि.मी.की दूरीपर स्थित श्री1008 चिंतामणी पार्श्वनाथ दिग. जैन अतिशय क्षेत्र कचनेर की वार्षिक यात्रा दिनांक 13, 14 एवं 15, नवंबर 2016 को हो रही है। यह त्रिदिवसीय यात्रा महोत्सव में मूलनाय भगवान चिंतामणी पार्श्वनाथजी की प्रतिमा पंचामृत आभिषेक, पूजन, आरती होती हैं। त्रिद्विसीय महाप्रसाद का आयोजन अंचल के अध्यक्ष श्री प्रमोदकुमार कासलीवाल, कोषाध्यक्ष श्री मनोजकुमार साहूजी एवं श्री सुनीलकुमार पाटणी अंधारी द्वारा किया गया है। सभी श्रावक श्राविका क्षेत्र दर्शन हेतु एवं महाप्रसाद का लाभलेने हेतु अवश्य पधारें।

महाराष्ट्र अंचल द्वारा आसेगांव क्षेत्र के कर्मचारियों को बीमा पालिसी प्रदान करते हुए राष्ट्रीय मंत्री श्री संतोष जैन (पेंढारी), अंचल मंत्री श्री बिपिन कासलीवाल, कोषाध्यक्ष श्री मनोजकुमार साहूजी श्री केतन ठोले, डॉ.जैन, श्री प्रकाश सेठी, श्री संतोष काला एवं श्री पहाड़े

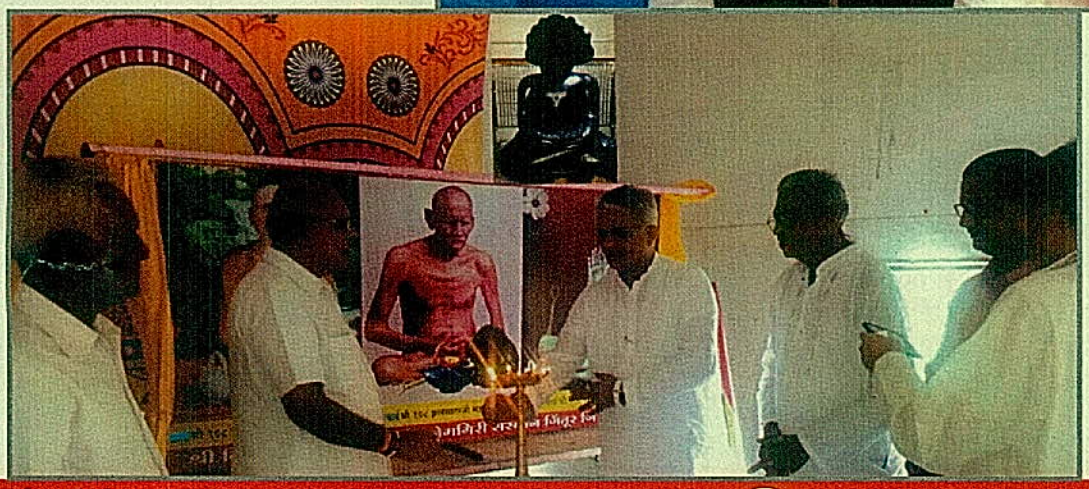

अतिशय क्षेत्र नेमगिरि जितूर क्षेत्र पर वार्षिक यात्रा दि. 21 सितम्बर 2016 के पावन प्रसंग पर दीप प्रज्वलन करते हुए महाराष्ट्र अंचल के अध्यक्ष श्री प्रमोदकुमार कासलीवाल, महामंत्री श्री देवेन्द्रकुमार कोषाध्यक्ष श्री मनोज साहुजी।

श्री 1008 चन्द्रप्रभु दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, कुमठे-सोलापुर, जीर्णोद्धार समिति चेयरमेन-अनिल जमगे, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुंबई 10 लाख रुपये का चेक प्रदान करते हुए ट्रस्ट मंडल अध्यक्ष श्री शाम पाटील, वालचंद पाटील, नितीन कासार, सचिन कासार, रविंद्र कटके, नितीन पानपट एवं कार्यकारिणी तथा गणमान्य

श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, सावरगांव (काटी)-तुलजापुर, जीर्णोद्धार समिति चेयरमेन-अनिल जमगे, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुंबई 3 लाख रुपये का चेक प्रदान करते हुए कमेटी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री नीलम अजमेरा, अंचल के मंत्री श्री रविंद्र कटके, दीपक शाह, पं.महावीर शास्त्री, महेश नळे, सावरगांव मंदिर के ट्रस्टी श्री प्रफुल्ल मेहता, गांधी, सौ.कीर्ति अजमेरा, सौ. अमिता कटके, सौ. सुरेखा जमगे आदि

औरंगाबाद में श्री खंडेलवाल दिगम्बर जैन पंचायत राजाबाजार पार्श्वनाथ मंदीर में प्रज्ञायोगी आचार्य श्री 108 गुप्तिनंदीजी महाराज एवम् ससंघ सान्निध्य में श्री कैलासचंदजी हिरालालजी कासलीवाल परिवार चांदवडवाला हडको, औरंगाबाद के करकमलों से तीर्थरक्षा कलश की स्थापना करते हुए महाराष्ट्र अंचल अध्यक्ष श्री प्रमोदकुमार कासलीवाल, महामंत्री श्री देवेंद्रकुमार काला, पंचायत अध्यक्ष श्री ललीत पाटणी, छायाचित्र में दिखाई दे रहे हैं।

कवि कैलाश मड़बैया हिन्दी दिवस पर 2 लाख रुपयों के राष्ट्रीय लोक भूषण पुरस्कार सम्मानित

प्रतिष्ठित हिन्दी संस्थान द्वारा हिन्दी दिवस पर सुप्रसिद्ध कवि-लेखक कैलाश मड़बैया भोपाल को दो लाख रुपयों के लोक भूषण सम्मान से ताम्र पत्र और अंगवस्त्र आदि सहित, लखनउ में सम्पन्न एक वृहद और भव्य समारोह में वरिष्ठ साहित्यकार और संस्थान-अध्यक्ष डॉ. उदय प्रताप सिंह एवं उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से वरिष्ठ केबिनेट मंत्री प्रो. अभिषेक मिश्र द्वारा अलंकृत किया गया। देश भर के चुनिन्दा साहित्यकारों को सम्मानित करने के बीच, मध्य देश बनाम बुन्देलखण्ड को इस वर्ष यह एकमात्र सर्वोच्च सम्मान मड़बैया जी के नाम पर प्रदान किया गया है।

हमारे नये बने सदस्य

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार में हम हृदय की गहराईयों से आप सभी का स्वागत करते हैं, अभिनंदन करते हैं।

परम सम्माननीय सदस्य

डॉ.सतीश जम्बुकुमार दोशी
अकलुज, महाराष्ट्र

नवलकिशोर सिद्धसेन जैन
अहमदाबाद

सम्माननीय सदस्य

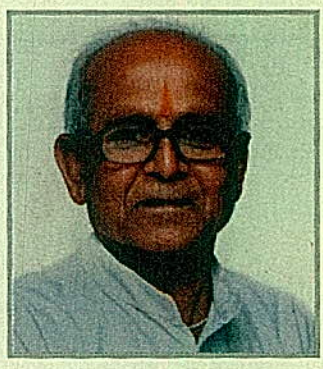

सेठी ट्रस्ट दिल्ली
प्रतिनिधि-भरत काला,
मुंबई

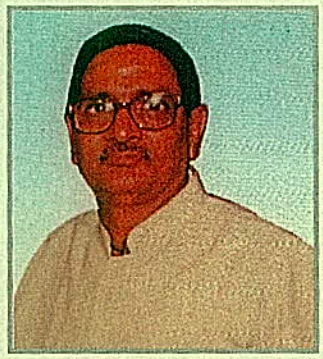

सेठी ट्रस्ट दिल्ली
प्रतिनिधि-बाबूलाल जैन छाबड़ा,
लखनऊ

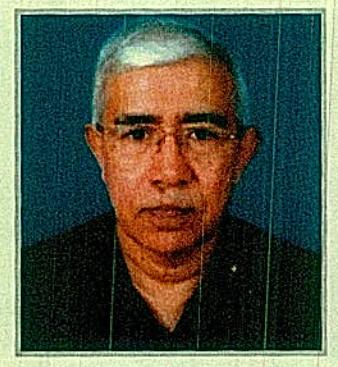

ललित सेठी मेमोरियल ट्रस्ट
प्रतिनिधि-महावीरप्रसाद सेठी,
सिल्चर-आसाम

आजीवन सदस्य

श्री निरज सुधाकारसा साहुजी
औरंगाबाद (महा.)

श्रीमती प्रेमलता सुरेशकुमार जैन (गोधा),
हैद्राबाद (तेलंगना)

श्री महावीर लाभचंदजी जैन,
इंदौर (म.प्र.)

श्री हेमंतकुमार ताराचंद जैन
चैन्नई (त.ना.)

श्री दौलत मानकचंदजी गंगवाल
इंदौर (म.प्र.)

आजीवन सदस्य

श्री जितेन्द्रकुमार जुगराज जैन (बडजात्या)
चैन्नई (त.ना)

श्री अनिलकुमार नरेशकुमार जैन
चैन्नई (त.ना.)

श्री ललितकुमार राजकुमार बडजात्या
चैन्नई (त.ना)

श्री एस. श्रेणिगा राजन जैन
तीन्डीवनम्, वेल्लूपुरम (त.ना)

श्री मुकेशकुमार शांतीकुमार जैन (ठोलिया)
चैन्नई (त.ना)

श्री चंद्र गिलोनजिलाल जैन
अहमदाबाद (गुज.)

श्री यज्ञकुमार केशवराव करेवार
परभणी (म.ह)

डॉ. दिपक विद्याधरराव महिन्द्रकुमार
परभणी (महा.)

श्री अशोक जयकुमार जावले
परभणी (महा.)

श्री अनंत राजारामजी अम्बुरे
औरंगाबाद (महा.)

श्री नारायण मारोतराव कालेबेरे
परभणी (महा.)

श्री पद्माकुमार अम्बादास कंदी
परभणी (महा.)

श्री अशोक मानिकलालजी पेंढारी
परभणी (महा.)

श्रीमती कमलेश विमलकुमार जैन
शाढोरा-अशोकनगर

श्री दिलीपकुमार, रामलाल अजमेरा
इचलकरंजी (महा.)

श्रीमती रेखा प्रभाकर जैन
हैद्राबाद (आध्र प्र.)

केशव महावीर कुमार गोदीका
सांगानेर जयपुर (राज.)

श्री दौलतकुमार महेरचन्दजी जैन
जयपुर (राज.)

श्री अमितकुमार दौलतकुमार जैन
जयपुर (राज.)

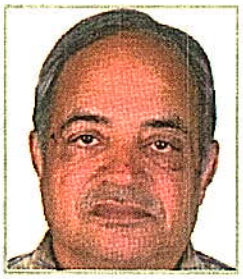
श्री शरदकुमार निहालचंद गोदीका
जयपुर (राज.)

श्री अरुणकुमार महेरचंदजी जैन
जयपुर (राज.)

श्रीमती राजेश्वरी सुरेन्द्रकुमारजी जैन
जयपुर (राज.)

श्री राजीव धूपचन्दजी पांण्डया
जयपुर (राज.)

श्री संजीवकुमार धुपचंदजी पाण्ड्या
जयपुर (राज.)

श्री सुधीरकुमार जैन
रफीगंज, औरंगाबाद